COMPARATIVE LITERATURE

BA HINDI

IV SEMESTER

COMPLEMENTARY COURSE

(2011 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY P.O., MALAPPURAM, KERALA-679 635.

400

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

BA HINDI

1V SEMESTER

COMPLEMENTARY COURSE

COMPARATIVE LITERATURE

Prepared By:

Dr.P.Priya
Asst.Professor,
Dept.of.Hindi
Govt.Arts&Science College,
Meenchanda,Calicut

Scrutinised By:

Dr.Pavoor Sasheendran,
38/1294, 'Appughar',
Edakkad P.O.,
Calicut-5

Lay out : Computer Section, SDE.

©
Reserved

विषय सूचीः

Unit -1 **तुलनात्मक साहित्य: अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप**

Unit-2 **तुलनात्मक साहित्य,राष्ट्रीय साहित्य, विश्व साहित्य तथा सामान्य साहित्य**

Unit-3 **तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका**

Unit-4 **हिन्दी और मलयालम में तुलनात्मक साहित्य**

Books for Reference:

1. **तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य – इन्द्रनाथ चौधुरी**
2. **प्रतीकी कवि सुमित्रानंदन पंत और जी.शंकर कुरुप -डॉ .एन चन्द्रशेखरन नायर**
3. **हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ नगेन्द्र , डॉ.हरदयाल**

UNIT-1

तुलनात्मक साहित्य : अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप

प्रत्येक लेखक के द्वारा रचित साहित्य एक पूर्ण इकाई है तथा वह इकाई समूचे मानव समाज की सार्वभौम सृजनात्मकता की परिचायक है।गोयते ,विश्व साहित्य, (weltliteratur) **की अवधारणा को फैलाने में जुट गए थे। भारत में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ,विश्व साहित्य, को स्पष्ट कर रहे थे कि यह पृथ्वी विभिन्न टुकडों में बँटी हुई लोगों के रहने का अलग अलग रचित साहित्य नहीं है। प्रत्येक लेखक के द्वारा रचित साहित्य एक पूर्ण इकाई है और यह समूचे मानव समाज की सार्वभौम सृजनात्मकता की परिचायक है। विश्व साहित्य जिसको अंग्रेजी में ,कम्पैरेटिव लिटरैचर, कहा जाता है इस सार्वभौम सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति है।**

अर्थ

तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के कम्पैरेटिव लिटरैचर का हिंदी अनुवाद है। विदेश में इसे साँस्कृतिक अध्ययन के नाम से भी जाना जाता है।अंग्रेजी के कवि मैथ्यू आर्नाल्ड सन् 1848 में अपने एक पत्र में सबसे पहले कम्पैरेटिव लिटरैचर पद का प्रयोग किया था। रेने वेलक के अनुसार, तुलनात्मक शब्द में तुलना करने की प्रक्रिया जुडी हुई है और तुलना में वस्तुओं को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके। इसी दृष्टि से अंग्रेजी में तुलनात्मक शब्द का प्रयोग लगभग सन् 1598 से हो रहा है क्योंकि इसी समय फ्रान्सिस मेयर्स ने इसी अर्थ को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिखी थी जिसका शीर्षक था, ,ए कम्पैरेटिव डिस्कोर्स ऑफ आवर इंगलिश पोयट्स विद द ग्रीक लैटिन एंड इटालियन पोयट्स ।परन्तु तुलनात्वक तथा साहित्य -इन दो शब्दों का युग्म प्रयोग करते हुए पहले पहल मैथ्यू आर्नाल्ड ने तुलनात्मक साहित्य पद की सृष्टि की।

सन् 1886 में अपनी एक पुस्तक का शीर्षक कम्पैरेटिव लिटेरेचर रखकर सर्वप्रथम एच.एम.पॉसनट ने इस विद्या शाखा को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयत्न किया था। बाद में 1901 में कॉन्टेंपोरेरी रिव्यू में द साइन्स ऑफ कंपैरेटिव लिटरेचर के नाम से उनका एक लेख भी प्रकाशित हुआ।अतः हम कह सकते है कि बीसवीं सदी की शुरुआत से कम्पैरेटिव लिटरैचर पद का प्रयोग शरू हो गया था।

साहित्य का प्राथमिक अर्थ था ,ज्ञान या साहित्य , का अध्ययन ।मगर बाद में इसका अर्थ हो गया ,किसी भी भाषा ,समय या देश में लिखित रचनाओं का समूह- (Literature is 'Literary production in general' or the body of writings in a period ,country,or region-Rene Weleck) **प्रो.लेन कूपर कहते है कि तुलनात्मक साहित्य साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है।और उनके अनुसार यह एक बनावटी शब्द है जिससे न तो कोई अर्थ निकलता है और न यह व्याकरण सम्मत ही प्रामाणित हो पाता है।इस तरह तुलनात्मक साहित्य का मतलब होगा, तुलनात्मक व्युत्पत्ति।फ्रान्स में** Litterature **का अर्थ है, साहित्यिक अध्ययन।और इसलिए उन्नीसवीं शती के प्रारंभ में ही तुलनात्मक साहित्य या साहित्यिक अध्ययन** (Litterature Comparee) **जैसे पद की सृष्टि हुई। फ्लेचर के अनुसार इसका अर्थ है, साहित्य का तुलनात्मक विज्ञान।**

परिभाषा

तुलनात्मक साहित्य एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन है और तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है। मगर क्रोचे का कहना है कि तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विद्यानुशासन बन ही नहीं सकता क्यों कि किसी भी साहित्यिक अध्ययन के लिए तुलना एक आवश्यक अंग है।चाहे एक भाषा में लिखित साहित्य का अध्ययन हो अथवा एक से अधिक भाषाओं में लिखित तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन हो,दोनों ही स्थितियों में अध्ययन का केन्द्रीय विषय साहित्य ही है और इसीलिए तुलनात्मक साहित्य को किसी एक भाषा में लिखित साहित्य के अध्ययन से अलग नहीं किया जा सकता।

तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों अथवा उनके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्व है। तुलनात्मकता एक विशेष प्रकार की मानसिकता अथवा मानसिक दृष्टि है।रेमाक का कहना है कि तुलनात्मकता सांश्लेषिक मानसिक दृष्टि है जिसके द्वारा भौगोलिक एवं जातीय स्तर पर साहित्य का अनुसंधानात्मक विश्लेषण संभव हो पाता है।यदि एक ही भाषा में लिखित साहित्य के अंतर्गत दो समान या असमान रूपों या प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो इसको तुलनात्मक अध्ययन कहना संभव नहीं, क्योंकि इसमें सांश्लेषिक मानसिक दृष्टि के विस्तार की संभावना नहीं होगी।मगर जब तुलना किसी एक राष्ट्र की परिधि को पार करके दूसरे भाषाओं में लिखित साहित्य को भी अपने में समेट लेती है तो उसको निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य कहा जाएगा।

या फिर बंगाल या आंन्ध्र अथवा महाराष्ट्र में रहने वाला लेखक एक ही हिंदी भाषा में साहित्य रचना करते है तो उनकी स्थानीय राजनीतिक तथा सामाजिक परिवेश से प्रभावित साहित्य में विषय-वस्तु, शैली तथा टोन में अंतर आ जाता है और उनका अध्ययन भी तुलनात्मक साहित्य की परिधि के अंतर्गत समाविष्ट हो जाता है।

इसके अतिरिक्त तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों को जैसे कला, दर्शन, धर्मशास्त्र, मनेविज्ञान तथा समाज विज्ञान आदि को भी अपने में समेटता है। हेनरी एच.एच.रेमाक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य एकक राष्ट्र की परिधि के परे दूसरे राष्ट्र के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान,धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबधों का भी अध्ययन है।

उलरिच वाइन स्टाइन ने अपनी पुस्तक, कंपेरेटिव लिटरेचर एंड लिटरेरी थियोरी,(1973) में तुलनात्मक साहित्य की विभिन्न परिभाषाओं को दो वर्गों में बाँटा हैः

(क) पॉल वां टिगहेम (Paul Van Tieghem)**,ज्याँ-मारि कारे** (Jean-Marie Carre)**तथा मारिओस फ्रास्वास गुइयार्द** (Marius Francois Guyard) **जैसे पैरिस तथा जर्मन स्कूल के परंपरावादि विद्वानों की संकुचित संकल्पनाओं से जुडी हुई परिभाषाएँ तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में साहित्यिक इतिहास के तत्व को अधिक महत्व देती है।इन विद्वानों का प्रतिपाद्य है कि तुलनात्मक साहित्य एक इतिहास सम्मत अनुशासन है जिसको काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यमूलक अनुशासन के साथ जोडा नहीं जा सकता,क्योंकि ठोस यथार्थ, तथ्यात्मक चेतना तथा विभिन्न राष्ट्रों के कृतिकार के,कृति,पाठक के संबन्धों के साथ इसका संपर्क होता है।**

(ख) रेने वेलक,रेमाक, ऑस्टिन वारेन तथा प्रावर जैसे उदारतावादी विदिवानों को अमरीकी स्कूल के अंतर्गत स्थान दिया जाता है जिन्होंने अपनी परिभाषाओं में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में काव्यशास्त्रीय सोंन्दर्यमूलक कलापरक दृष्टि को महत्व दिया है।इनके अतिरिक्त रूसी स्कूल के विद्वानों के लिए तुलनात्मक साहित्य एक सार्विक साहित्यिक संवृत्ति का सार-संग्रह है। यह संवृत्ति (phenomenon) **अंशतः विभिन्न देशों के जनसमूह के सामाजिक जीवन के ऐतिहासिक विकास पर आधारित है तथा अंशतः पारस्परिक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक आदान-प्रदान पर निर्भरशील है।**

झुरमुनस्कि का कहना है कि पूर्व निर्धारित नियमों के अनुसार कला एवं साहित्य का विकास होता है और मानव जगत के सामाजिक तथा ऐतिहासिक विकास के यह समानांतर होता है।अतएव समाज साहित्य का आवश्यक अधःस्तर है और साहित्य संयोग से उसकी अधिरचना है।

पैरिस जर्मन स्कूल (तुलनात्मक साहित्य का फ्रान्सिसी संप्रदाय)

गुइयारद की पुस्तक 'La Literature Comparee' **की भूमिका लिखते हुए कारे ने तुलनात्मक साहित्य को साहित्येतिहास का एक भाग कहा है। यह अंतराष्ट्रीय आध्यात्मिक संबन्धों का अध्ययन तथा बायरन और पुश्किन,गोयते तथा कारलाइल,स्कॉट तथा विगने अथवा विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों के लेखकों,जीवनियों,प्रेरणाओं तथा कृतियों के तथ्यानुपरक संपर्कों की छानबीन है। यदि तथ्यानुपरक संपर्कों के अध्ययन का अर्थ मात्र विषय संग्रह है तो निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य अपने सम्मानित रूप को खो बैठता है क्योंकि ऐसा करने पर साहित्य का सौंन्दर्यमूलक पक्ष बेमानी हो जाता है। तथ्यानुपरक संपर्कों के आधार पर तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का अर्थ है- उसकी परिधि से साहित्यालोचन को हटाकर मात्र विषय संग्रह को तुलनात्मक साहित्यि मान लेना। वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी विद्वानों की पहली पीढी साहित्य सुरक्षा के आधार पर अभिनव परिवर्तन तथा पद्धति को नकारते हुए तथ्यात्मक संपर्कों तथा दस्तावेजों के विश्लेषण पर ज्यादा बल देती रही। फ्रान्सीसी विद्वानों ने व्यावहारिक ठोस आलोचनात्मक दृष्टि की सहायता से तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में साम्य या वैषम्यमूलक तुलना तथा प्रभाव के सूत्रों के अध्ययन का प्रसार करते हुए संश्लेषणात्मक दृष्टि को स्वीकार किया। एतियम्बल (**Etiemble**)ज्यॉन (**Jeune**),तथा पीशवाज और रूसो का योगदान इस दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है जिन्होंने तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में संश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रसार किया।**

रेने वेलेक तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में द्विआधारी(binary**) अध्ययन का विरोध करते हुए कहते हैं कि द्विआधारी अद्ययन का मतलब है कि हमें**

तुलनात्मक साहित्य को साहित्य के विदेश वाणिज्य के रूप में ही स्वीकार करना होगा।किसी भी भाषा में लिखित मात्र उन्हीं कृतियों का अध्ययन संभव होगा जिनका कोई विदेशी द्विआधारी संबन्ध है और इस तरह कृतिविशेष का स्वतंत्र विश्लेषण संभव नहीं होगा। रेने वेलेक ने द्विआधारी अध्ययन को तुलनात्मक साहित्य के लिए संकीर्ण अध्ययन माना है।मगर टिगहेम ने द्विआधारी अध्ययन को ही तुलनात्मक साहित्य मानते हुए उसे ,सामान्य साहित्य, से अलग बताया जहाँ नाना साहित्यों में पाये जानेवाले सामान्य तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

पैरिस-जर्मन स्कूल के विद्वानों की दृष्टि ,वैज्ञानिक, है। उनके मूल प्रतिपाद्य के अनुसार तुलनात्मक साहित्य काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यात्मक कलापरक अनुशासन नहीं वरन् एक ऐतिहासिक अनुशासन है।इसका संबन्ध ठोस यथार्थ से है तथा विभिन्न राष्ट्रों के कृतिकारों, कृतियों, पाठकों तथा दर्शकों के तथ्यात्मक, सचेतन निश्चेय संपर्कों से भी है।पैरिस-जर्मन स्कूल ने वस्तुतः विभिन्न साहित्यों की आपसी संबन्धों, प्रभाव-सूत्रों, आदान-प्रदान, रूपांतरणों का कारण-संबन्धी अध्ययन किया है।और इस दृष्टि से पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक-संबन्धों का अध्ययन है।

अमरीकी स्कूल

तुलनात्मक साहित्य का अमरीकी स्कूल साहित्येतिहास की सामान्य संरचना के अंतर्गत तुलनात्मक साहित्य के स्थान को निर्धारित करता हुआ एक ओर ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के साथ साहित्य के संबन्ध का अध्ययन एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकारता है। रेने वेलेक,हैरी लेविन, डेविड मेलोन आदि विद्वानों ने सादृश्यता,मोटिफ,शैली पक्ष,विधा,साहित्यिक आंदोलन तथा परंपरा की तुलनात्मक छानबीन के द्वारा साहित्यिक कृतियों के कलात्मक स्वरूप को उद्घाटित किया है। तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत ज्ञान के क्षेत्रों तथा प्रतीतियों की छानबीन साहित्यिक तथ्यों को प्रकाश में लाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।वस्तुतः जर्मन भाषा में तुलनात्मक साहित्य का अर्थ है साहित्य का तुलनात्मक विज्ञान। तुलनात्मक साहित्य साहित्येतिहास का विश्लेषण है जिसमें विभिन्न साहित्यों के पारस्परिक यथार्थ संबन्धों

की छानबीन की जाती है। तुलनात्मक साहित्य साहित्य के सिद्धान्तों का अध्ययन होता है और यह साहित्यालोचन का विश्लेषण है। इसके प्रारंभिक विद्वानों ने आलोचना को इसके क्षेत्र से बाहर रखा था क्योंकि उनके अनुसार आलोचना मूल्यांकन केलिए बाध्य करती है और साहित्य के तुलनात्मक ऐतिहासिक तथ्यों के निष्पक्ष विवेचन में बाधा उपस्थित होती है।रेनेवेलेक का कहना है कि साहित्य के इतिहास के लिए तथ्यों का चयन भी अपने आप में एक आलोचनात्मक क्रिया है तथा वह मूल्यांकनपरक भी है।हमारी चिंतन धारा के पीछे एक परंपरा रहती है जिसे हम सामाजिक संदर्भ कहते है जो एक सामाजिक परिवेश से संबन्धित संस्कृति का एक हिस्सा होता है इसीलिए साहित्य को उसके सामाजिक या सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आधार तथा ऐतिहासिक संदर्भ से काटना असंभव है इसीलिए साहित्य का अध्ययन अनायास ही अंतरविद्यावर्ती बन जाता है। साहित्य की तुलना ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के साथ संभव है और इसीलिए वह तुलनात्मक साहित्य का विषय भी है।आंदाल तथा मीराबाई की धार्मिक विचारधाराओं का विश्लेषण करते हुए जब अद्वैत रहस्यवाद के स्वतंत्र विवेचन के साथ इनके साहित्य की तुलना की जाती है तब निश्चय ही यह अध्ययन तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत स्थान पा जाता है।रेमाक की परिभाषा को आधार बनाकर तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैः

तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है जिससे विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की एक संपूर्ण इकाई के रूप में व्यापक पहचान की और अधिक संभावना बनती है।यह काम केवल विभिन्न भषाओं में रचित साहित्यों की तुलना से ही संभव हो सकता है।तात्पर्य है कि तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में क्षेत्रीयता अथवा भौगोलिकता तथा वैचारिक जातिगतता के आश्रय से साहित्य के विश्लेषण का प्रसार होता है।

तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी जर्मन स्कूल तथा अमरीकी स्कूल ने तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए उसकी नाना विशेषताओं का उल्लेख किया है। दोनों संप्रदायों के विद्वान इस बात से सहमत हैं कि तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक समस्याओं का ध्यान है जहाँ एक से अधिक साहित्यों का उपयोग

किया जाता है। सैंद्धान्तिक दृष्टि से तुलना या तो आंतरभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडी हो सकती है जहाँ तुलनीय विभिन्न साहित्यिक कृतियाँ एकक साहित्यानुशासन से संबन्ध होती है।नहीं तो यह तुलना अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से संबन्ध होती है जहाँ तुलना एकक साहित्यानुशासन की परिधि को पार कर दूसरी भाषाओं में लिखित साहित्यों को अपने में समेट लेती है। तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है।

साहित्येतिहास का कोई भी विवेचन आलोचना की सहायता के बिना संभव नहीं क्यों कि साहित्य में केवल मृत तत्व नहीं होते,प्रासंगिक तथ्य होते है।इसलिए तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक आलोचना का योग स्वाभाविक है और आवश्यक भी।इलियट का तो यहाँ तक कहना है कि तुलना तथा विशेषण किसी भी आलोचक के महत्वपूर्ण औजार है।मगर तुलनात्मक साहित्य सुस्पष्ट ढंग से तुलनात्मक होता है।बुद्धदोव बोस का कहना है कि यह विभिन्न दर्शनग्राही अध्ययन होता है।

वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य एक ओर जहाँ एकक साहित्याध्ययन को एक ऐसी पद्धति प्रदान करता है जिससे परिप्रेक्ष्य का विस्तार हो सके वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रीय परिधि की संकीर्णता को तोडता हुआ विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों में प्रभावित प्रकृतियों आंदोलनों की खोज करता है एवं मनुष्य की दूसरी ज्ञानात्मक क्रियाओं के साथ साहित्य के संबन्धों को तोलता है। तुलनात्मक साहित्य राष्ट्रीय साहित्य के इतिहासों के झूठे अलगाव के खिलाफ लडता है।इसका अर्थ यह भी नहीं कि इस तुलनात्मक प्रक्रिया का उद्देश्य तारतम्यता का विवेचन है। यानी एक को दूसरे के प्रतिद्वन्दी के रूप में विश्लेषित करना है।

तुलनात्मक साहित्य का प्रारंभिक अद्ययन सन् 1800 में मॉडम द स्तयाल ने शुरू किया। इन्होंने मूलतः साहित्येतिहास और साहित्य तथा समाज के संबन्ध-सूत्रों का अध्ययन किया। इससे दो साल पहले (1978) फ्रेडरिक श्लेगल ने ,यूनिवेर्सल पोयजी, की अवधारणा में तुलनात्मक साहित्य की सार्वदर्शीयता को जोडकर सौंन्दर्यबोधक काव्यशास्त्रीय दृष्टि का प्रसार किया था। उसके उपरान्त गोयते ने विश्व साहित्य की बात कही जिसका अर्थ था एक ऐसी सामान्य विरासत जिसकी

अभिव्यक्ति श्रेष्ठ कवियों और सौंन्दर्य बोध के लेखकों द्वारा होती है। और जो मानवता में निहित सार्वजनीनता को प्रकाश में लाती है।दरअसल तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक अद्ययन की ऐसी शाखा है जो प्रत्येक देश और काल की साहित्यिक अभिव्यक्ति की मूलभूत संरचना से संबन्ध है।यही कारण है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इसको ,विश्व साहित्य कहा था।

विभिन्न साहित्यिक अध्ययन में तुलना का प्रयोग मूलतः सादृश्य संबन्ध,परंपरा विवेचन तथा प्रभाव-सूत्रों की खोज के लिए किया जाता है।सादृश्य संबन्धी विवेचन में दो कृतियों का शैलीगत,संरचनागत, मूड या विचारगत विश्लेषण किया जाता है।परंपरा या रीति से तात्पर्य है ऐतिहासिकता की दृष्टि से अथवा, कालानुसार या कालगत दृष्टि से संबन्ध एक ही वर्ग के समतुल्य कृतियों की साम्यमूलक तुलना। रामायण की सीता के सात ,कौडियों से खरीदा , की नायिका की तुलना अथवा उपनिषद् की दार्शनिक अभिव्यक्ति के साथ रवींन्द्रनाथ के पूजा-विषयक गीतों की तुलना क्रमशः सादृश्य संबन्धी अथवा परंपरा विवेचन का तुलनात्मक अध्ययन स्वीकार किया जाएगा।इसी तरह प्रभावसूत्रों का विवेचन भी तुलनात्मक होता है।निराला पर रवींन्द्र का प्रभाव अथवा रवींन्द्र पर शैली,उपनिषद तथा कबीर का प्रभाव तुलनात्मक प्रभाव विवेचन है।

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को मूल रूप से ऐतिहासिक अथवा कालक्रमिक न मानकर एक कालिक अथवा कलात्मक दृष्टि से एक स्वतंत्र संपूर्ण प्रणाली ही माना जाता है। तुलनात्मक साहित्य को लेकर अनेक वादविवाद भी है, रेमाक जैसे लोग इसे स्वतंत्र मानते है तो नरेश गुहा जैसे लोग इसे पूरक विषय के रूप में मानते है। तुलनात्मक साहित्य की स्वतंत्र एवं सम्मानित स्थिति का उल्लेख करते हुए डेविड.एच.मेलोन कहते है कि तुलनात्मकतावादी आलोचक इसलिए तुलनात्मकतावादी आलोचक नहीं है क्योंकि वह एक के स्थान पर दो-तीन साहित्यों को लेकर काम करना चाहता है बल्कि वह एक के स्थान पर दो तीन साहित्यों को लेकर इसलिए काम करना चाहता है क्योंकि वह तुलनात्मकवादी आलोचक है।

जवाब लिखिए

1. **रवींन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार विश्व साहित्य का अर्थ क्या है।**

यह पृथ्वी विभिन्न टुकडों में बँटी हुई लोगों के रहने का अलग अलग रचित साहित्य नहीं है। प्रत्येक लेखक के द्वारा रचित साहित्य एक पूर्ण इकाई है और यह समूचे मानव समाज की सार्वभौम सृजनात्मकता की परिचायक है। विश्व साहित्य जिसको अंग्रेजी में ,कम्पैरेटिव लिटरैचर, कहा जाता है इस सार्वभौम सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति है।

2. **रेने वेलक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा क्या है।**

रेने वेलक के अनुसार ,तुलनात्मक शब्द में तुलना करने की प्रक्रिया जुडी हुई है और तुलना में वस्तुओं को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके।

3. **प्रो.लेन कूपर के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ क्या है।**

प्रो.लेन कूपर के अनुसार तुलनात्मक साहित्य साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है।और यह एक बनावटी शब्द है जिससे न तो कोई अर्थ निकलता है और न यह व्याकरण सम्मत ही प्रामाणित हो पाता है।

4. **क्रोचे के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ क्या है।**

क्रोचे के अनुसार तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विद्यानुशासन बन ही नहीं सकता क्यों कि किसी भी साहित्यिक अध्ययन के लिए तुलना एक आवश्यक अंग है।चाहे एक भाषा में लिखित साहित्य का अध्ययन हो अथवा एक से अधिक भाषाओं में लिखित तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन हो,दोनों ही स्थितियों में अध्ययन का केन्द्रीय विषय साहित्य ही है और इसीलिए तुलनात्मक साहित्य को किसी एक भाषा में लिखित साहित्य के अध्ययन से अलग नहीं किया जा सकता।

5. **तुलनात्मक साहित्य का आधार तत्व क्या है।**

तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों अथवा उनके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्व है।

6. तुलनात्मक साहित्य से संबन्धित रेमाक की राय क्या है।

रेमाक का कहना है कि तुलनात्मकता सांश्लेषिक मानसिक दृष्टि है जिसके द्वारा भौगोलिक एवं जातीय स्तर पर साहित्य का अनुसंधानात्मक विश्लेषण संभव हो पाता है।यदि एक ही भाषा में लिखित साहित्य के अंतर्गत दो समान या असमान रूपों या प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो इसको तुलनात्मक अध्ययन कहना संभव नहीं ,क्योंकि इसमें सांश्लेषिक मानसिक दृष्टि के विस्तार की संभावना नहीं होगी।मगर जब तुलना किसी एक राष्ट्र की परिधि को पार करके दूसरे भाषाओं में लिखित साहित्य को भी अपने में समेट लेती है तो उसको निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य कहा जाएगा।

7. हेनरी एच.एच.रेमाक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ क्या है।

हेनरी एच.एच.रेमाक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य एकक राष्ट्र की परिधि के परे दूसरे राष्ट्र के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान,धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।

8. कंपेरेटिव लिटरेचर एंड लिटरेरी थियोरी किसकी पुस्तक है।

उलरिच वाइन स्टाइन की।

9. पैरिस तथा जर्मन स्कूल के परंपरावादि विद्वान कौन कौन हैं।

पॉल वां टिगहेम(Paul Van Tieghem**),ज्याँ-मारि कारे (**Jean-Marie Carre**)तथा मारिओस फ्रास्वास गुइयार्द (**Marius Francois Guyard**) आदि।**

10. रेने वेलक,रेमाक, ऑस्टिन वारेन तथा प्रावर जैसे उदारतावादी विदिवानों को किस स्कूल के अंतर्गत रखा गया है।

अमरीकी स्कूल के अंतर्गत ।

11. तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में संश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रसार किन लोगों ने किया।

एतियम्बल (Etiemble**)ज्यॉन (**Jeune**),तथा पीशवाज और रूसो का योगदान इस दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है जिन्होंने तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में संश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रसार किया।**

12.तुलनात्मक साहित्य में द्विआधारी(binary) अध्ययन से संबन्धित रेने वेलक का विचार व्यक्त कीजिए।

रेने वेलेक तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में द्विआधारी(binary) अध्ययन का विरोध करते हुए कहते हैं कि द्विआधारी अद्ययन का मतलब है कि हमें तुलनात्मक साहित्य को साहित्य के विदेश वाणिज्य के रूप में ही स्वीकार करना होगा।किसी भी भाषा में लिखित मात्र उन्हीं कृतियों का अध्ययन संभव होगा जिनका कोई विदेशी द्विआधारी संबन्ध है और इस तरह कृतिविशेष का स्वतंत्र विश्लेषण संभव नहीं होगा।रेने वेलेक ने द्विआधारी अध्ययन को तुलनात्मक साहित्य के लिए संकीर्ण अध्ययन माना है।

13. पैरिस-जर्मन स्कूल के सिद्धान्तों को व्यक्त कीजिए।

पैरिस-जर्मन स्कूल के विद्वानों की दृष्टि वैज्ञानिक, है। उनके मूल प्रतिपाद्य के अनुसार तुलनात्मक साहित्य काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यात्मक कलापरक अनुशासन नहीं वरन् एक ऐतिहासिक अनुशासन है।इसका संबन्ध ठोस यथार्थ से है तथा साथ ही विभिन्न राष्ट्रों के कृतिकारों, कृतियों, पाठकों तथा दर्शकों के तथ्यात्मक, सचेतन निश्चेय संपर्कों से भी है।पैरिस-जर्मन स्कूल ने वस्तुतः विभिन्न साहित्यों की आपसी संबन्धों,प्रभाव-सूत्रों,आदान-प्रदान,रूपांतरणों का कगरण-संबन्धी अध्ययन किया है।और इस दृष्टि से पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक-संबन्धों का अध्ययन है।

14.अमरीकी स्कूल के विद्वानों ने साहित्यिक कृतियों के कलात्मक स्वरूप को कैसे उद्घाटित किया था।

विद्वानों ने सादृश्यता,मोटिफ,शैली पक्ष,विधा,साहित्यिक आंदोलन तथा परंपरा की तुलनात्मक छानबीन के द्वारा साहित्यिक कृतियों के कलात्मक स्वरूप को उद्घाटित किया था।

16.साहित्य का अध्ययन अनायास ही अंतरविद्यावर्ती बन जाता है - स्पष्ट कीजिए।

हमारी चिंतन धारा के पीछे एक परंपरा रहती है जिसे हम सामाजिक संदर्भ कहते है जो एक सामाजिक परिवेश से संबन्धित संस्कृति का एक हिस्सा होता है,और

साहित्य को उसके सामाजिक या सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आधार तथा ऐतिहासिक संदर्भ से काटना असंभव है इसीलिए साहित्य का अध्ययन अनायास ही अंतरविद्यावर्ती बन जाता है।

17. तुलनात्मक साहित्य से संबन्धित रेमाक की परिभाषा क्या है।

तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है जिससे विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की एक संपूर्ण इकाई के रूप में व्यापक पहचान की और अधिक संभावना बनती है।य़ह काम केवल विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की तुलना से ही संभव हो सकता है।अर्थात् तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में क्षेत्रीयता अथवा भौगोलिकता तथा वैचारिक जातिगतता के आश्रय से साहित्य के विश्लेषण का प्रसार होता है।

18. तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी जर्मन स्कूल तथा अमरीकी स्कूल ने तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए दोनों संप्रदायों के विद्वान किस बात से सहमत हैं ।

दोनों संप्रदायों के विद्वान इस बात से सहमत हैं कि तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक समस्याओं का ध्यान है जहाँ एक से अधिक साहित्यों का उपयोग किया जाता है।

19. तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है। क्यों।

सैद्धान्तिक दृष्टि से तुलना या तो आंतरभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडी हो सकती है जहाँ तुलनीय विभिन्न साहित्यिक कृतियाँ एकक साहित्यानुशासन से संबन्ध होती है।नहीं तो यह तुलना अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से संबन्ध होती है जहाँ तुलना एकक साहित्यानुशासन की परिधि को पार कर दूसरी भाषाओं में लिखित साहित्यों को अपने में समेट लेती है। तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है।

20. साहित्येतिहास का कोई भी विवेचन आलोचना की सहायता के बिना संभव नहीं। क्यों।

साहित्येतिहास का कोई भी विवेचन आलोचना की सहायता के बिना संभव नहीं क्यों कि साहित्य में केवल मृत तत्व नहीं होते,प्रासंगिक तथ्य होते है।इसलिए तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक आलोचना का योग स्वाभाविक है और आवश्यक भी।

21. तुलनात्मक साहित्य की पद्दति क्या क्या है।

वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य एक ओर जहाँ एकक साहित्याध्ययन को एक ऐसी पद्धति प्रदान करता है जिससे परिप्रेक्ष्य का विस्तार हो सके वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रीय परिधि की संकीर्णता को तोडता हुआ विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों में प्रभावित प्रकृतियों आंदोलनों की खोज करता है एवं मनुष्य की दूसरी ज्ञानात्मक क्रियाओं के साथ साहित्य के संबन्धों को तोलता है।

22. तुलनात्मक साहित्य में फ्रेडरिक श्लेगल की देन क्या है।

फ्रेडरिक श्लेगल ने ,यूनिवेर्सल पोयजी, की अवधारणा में तुलनात्मक साहित्य की सार्वदर्शीयता को जोडकर सौंन्दर्यबोधक काव्यशास्त्रीय दृष्टि का प्रसार किया था।

23. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी तुलनात्मक साहित्य को ,विश्व साहित्य कहा था। क्यों।

दरअसल तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक अद्ययन की ऐसी शाखा है जो प्रत्येक देश और काल की साहित्यिक अभिव्यक्ति की मूलभूत संरचना से संबन्ध है।यही कारण है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इसको ,विश्व साहित्य कहा था।

24. विभिन्न साहित्यिक अध्ययन में तुलना का प्रयोग किस प्रकार आता हैं।

विभिन्न साहित्यिक अध्ययन में तुलना का प्रयोग मूलतः सादृश्य संबन्ध,परंपरा विवेचन तथा प्रभाव-सूत्रों की खोज के लिए किया जाता है।

25. तुलनात्मक प्रभाव विवेचन माने क्या है।

निराला पर रवींन्द्र का प्रभाव अथवा रवींन्द्र पर शैली,उपनिषद तथा कबीर का प्रभाव तुलनात्मक प्रभाव विवेचन है।

26. समाज साहित्य का आवश्यक अधःस्तर है और साहित्य संयोग से उसकी अधिरचना है। झुरमुनस्कि क्यों इस प्रकार कहते हैं।

झुरमुनस्कि का कहना है कि पूर्व निर्धारित नियमों के अनुसार कला एवं साहित्य का विकास होता है और मानव जगत के सामाजिक तथा ऐतिहासिक विकास के यह समानांतर होता है। अतएव समाज साहित्य का आवश्यक अधःस्तर है और साहित्य संयोग से उसकी अधिरचना है।

27. तुलनात्मक साहित्य से संबन्धित फ्रान्सीसी विद्वानों की पहली पीढी की मान्यता क्या है।

तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी विद्वानों की पहली पीढी साहित्य सुरक्षा के आधार पर अभिनव परिवर्तन तथा पद्धति को नकारते हुए तथ्यात्मक संपर्कों तथा दस्तावेजों के विश्लेषण पर ज्यादा बल देती रही।

28. पैरिस-जर्मन स्कूल के विद्वानों की दृष्टि ,वैज्ञानिक, है।कयों।

पैरिस-जर्मन स्कूल के विद्वानों की दृष्टि ,वैज्ञानिक, है कयों कि उनके मूल प्रतिपाद्य के अनुसार तुलनात्मक साहित्य काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यात्मक कलापरक अनुशासन नहीं वरन् एक ऐतिहासिक अनुशासन है।इसका संबन्ध ठोस यथार्थ से है तथा विभिन्न राष्ट्रों के कृतिकारों, कृतियों, पाठकों तथा दर्शकों के तथ्यात्मक, सचेतन निश्चेय संपर्कों से भी है।पैरिस-जर्मन स्कूल ने वस्तुतः विभिन्न साहित्यों की आपसी संबन्धों,प्रभाव-सूत्रों,आदान-प्रदान,रूपांतरणों का कारण-संबन्धी अध्ययन किया है। और इस दृष्टि से पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक-संबन्धों का अध्ययन है।

29. तुलनात्मक साहित्य का अमरीकी स्कूल की विचार व्यक्त कीजिए।

तुलनात्मक साहित्य का अमरीकी स्कूल साहित्येतिहास की सामान्य संरचना के अंतर्गत तुलनात्मक साहित्य के स्थान को निर्धारित करता हुआ एक ओर ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के साथ साहित्य के संबन्ध का अध्ययन एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकारता है।

30. तुलनात्मक साहित्य के प्रारंभिक विद्वानों ने आलोचना को इसके क्षेत्र से बाहर रखा था क्यों।

तुलनात्मक साहित्य के प्रारंभिक विद्वानों ने आलोचना को इसके क्षेत्र से बाहर रखा था क्योंकि उनके अनुसार आलोचना मूल्यांकन केलिए बाध्य करती है और साहित्य के तुलनात्मक ऐतिहासिक तथ्यों के निष्पक्ष विवेचन में बाधा उपस्थित होती है।

31. साहित्य का अध्ययन अनायास ही अंतरविद्यावर्ती बन जाता है -इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

हमारी चिंतन धारा के पीछे एक परंपरा रहती है जिसे हम सामाजिक संदर्भ कहते है जो एक सामाजिक परिवेश से संबन्धित संस्कृति का एक हिस्सा होता है

इसीलिए साहित्य को उसके सामाजिक या सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आधार तथा ऐतिहासिक संदर्भ से काटना असंभव है साहित्य की तुलना ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के साथ संभव है और इसीलिए वह तुलनात्मक साहित्य का विषय भी है।अतः साहित्य का अध्ययन अनायास ही अंतरविद्यावर्ती बन जाता है।

32. रेमाक की परिभाषा को आधार बनाकर तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा को प्रस्तुत कीजिए।

तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है जिससे विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की एक संपूर्ण इकाई के रूप में व्यापक पहचान की और अधिक संभावना बनती है।य़ह काम केवल विभिन्न भषाओं में रचित साहित्यों की तुलना से ही संभव हो सकता है।अर्थात् तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में क्षेत्रीयता अथवा भौगोलिकता तथा वैचारिक जातिगतता के आश्रय से साहित्य के विश्लेषण का प्रसार होता है।

33. तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है।इस विचार को स्पष्ट कीजिए।

सैंद्धान्तिक दृष्टि से तुलना या तो आंतरभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडी हो सकती है जहाँ तुलनीय विभिन्न साहित्यिक कृतियाँ एकक साहित्यानुशासन से संबन्ध होती है।नहीं तो यह तुलना अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से संबन्ध होती है जहाँ तुलना एकक साहित्यानुशासन की परिधि को पार कर दूसरी भाषाओं में लिखित साहित्यों को अपने में समेट लेती है। तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतःभाषिक परिप्रेक्ष्य से जुडा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है।

34. साहित्येतिहास का कोई भी विवेचन आलोचना की सहायता के बिना संभव नहीं क्यों।

साहित्येतिहास का कोई भी विवेचन आलोचना की सहायता के बिना संभव नहीं क्यों कि साहित्य में केवल मृत तत्व नहीं होते,प्रासंगिक तथ्य होते है।इसलिए तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक आलोचना का योग स्वाभाविक है और आवश्यक भी है।

35. तुलनात्मक साहित्य के बारे में मॉडम द स्तयाल का विचार क्या है।

तुलनात्मक साहित्य का प्रारंभिक अद्ययन सन् 1800 में मॉडम द स्तयाल ने शुरू किया। इन्होंने मूलतः साहित्येतिहास और साहित्य तथा समाज के संबन्ध-सूत्रों का अध्ययन किया।

UNIT-2

तुलनात्मक साहित्य,राष्ट्रीय साहित्य,
विश्व साहित्य तथा सामान्य साहित्य

साहित्य के अध्ययन के कुछ विषय और क्षेत्र ऐसे हैं जो तुलनात्मक साहित्य के निकटस्थ हैं या फिर परस्पर अतिछादित हैं।उदाहरण के रूप में राष्ट्रीय साहित्य (National Literature**),विश्व साहित्य(**World Literature**) तथा सामान्य साहित्य(**General Literature**)।**

राष्ट्रीय साहित्य

राष्ट्रीय साहित्य तुलनात्मक साहित्य की उन इकाइयों का संकेत देता है जिनकी सहायता से तुलनात्मक साहित्यानुशासन की बुनियाद तैयार होती है।तुलनात्मक साहित्याध्ययन के लिए विभिन्न राष्ट्रीय साहित्य का व्यापक ज्ञान एक निर्णायक आवश्यकता है।आर.ए साइसी ने तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा था कि तुलनात्मक साहित्य विभिन्न राष्ट्रीय साहित्यों का एक-दूसरे के आश्रय से तुलनात्मक संबन्धों का अध्ययन है।

गोयते ने विश्वसाहित्य (Welt Literatur)**के संदर्भ में राष्ट्रीय साहित्य की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि वेल्टलितरातुर अपनी साहित्यिक परंपराओं का बोध है। इस तरह विभिन्न राष्ट्र एक-दूसरे को पहचान या समझ सकते हैं।गोयते का विश्वास यह है कि इस तरह पारस्परिक आदान-प्रदान तथा अभिज्ञान के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रीय साहित्य अपनी विलक्षणता को बनाए रख सकेंगे।**

राष्ट्रीय साहित्य तथा तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत अध्ययन के कतिपय विषय ऐसे हैं जो राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र को पार कर जाते हैः (क)विभिन्न संस्कृतियों का आपसी संबन्ध या टकराहट का सामान्य अध्ययन, (ख)अनुवाद से संबन्धित समस्याओं का विशेष अध्ययन,(ग) राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन के अंतर्गत कतिपय महत्वपूर्ण विषय ऐसे है जिनका तुलनात्मक साहित्याध्ययन तथा शोधकार्य में महत्व कहीं अधिक है।

भौगोलिक दृष्टि से राष्ट्रीय तथा तुलनात्मक साहित्य में कोई स्पष्ट विभेदक रेखा खींचना मुश्किल है।पॉल वॉ टिगहेम का कहना है कि राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन मात्र एक ही साहित्य से संबन्धित प्रश्नों से अपना सरोकार रखता है और तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन दो साहित्यों से जुडी हुई समस्याओं का विश्लेषण करता है।क्रेग दा द्रेयर ( )तो इस अंतर को और भी स्पष्ट रूप से प्रकट करत् हुए कहते है कि राष्ट्रीय साहित्य की चारदीवारी के भीतर साहित्य का अध्ययन राष्ट्रीय साहित्य है और इस चारदीवारी के परे साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है।

भारतीय संदर्भ में हम कह सकते है कि बंगला साहित्य में रवींन्द्रनाथ के काव्य का स्थान निर्धारण के लिए अध्ययन साष्ट्रीय साहित्य है परंन्तु उस पर कबीर, शेली तथा उपनिषद के प्रभाव का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है।

विश्व साहित्य

उन्नीसवीं शती में यूरोपीय दृष्टिकोण के आश्रय से जब विश्व साहित्य की अवधारणा का प्रसार हुआ तब इसकी परिधि के अंतर्गत मात्र उसी साहित्य को स्थान दिया गया जिसका जन्म यूरोप में हुआ था।वस्तुतः विभिन्न यूरोपीय भाषिक क्षेत्रों में विकसित होनेवाले साहित्य से संबन्धित साहित्यिक विधाएँ,आलोचना तथा सिद्धान्त,साहित्यिक आंन्दोलन या फिर दो या तीन कृतियों या कृतिकारों के विशिष्ट अध्ययन को तुलनात्मक साहित्य स्वीकारा गया।गोयते के ,वेल्ट लितरातुर,का अर्थ भी यही है।इस प्रकार बीसवीं शती के प्रारंभ तक विश्व साहित्य और वह भी यूरोपीय साहिय की परिधि के भीतर ही तुलनात्मक साहित्य अपने आपमें सीमित रहा। बीसवीं शती में विश्व साहित्य के अर्थ में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।अब विश्व साहित्य का तात्पर्य है पृथ्वी के किसी भी साहित्य का अध्ययन अर्थात् सार्विक स्तर पर साहित्य के इतिहास को ही विश्व साहित्य माना जाने लगा है।आम तौर पर तुलनात्मक साहित्य दो देशों के साहित्यों या दो विभिन्न राष्ट्रों के लेखकों के तुलनात्मक संबन्धों का अध्ययन करता है।विश्व साहित्य का एक और अर्थ है कि केवल देश ही नहीं,काल, के संदर्भ में भी जो महान है अर्थात् काल की कसौटी में जिसे श्रेष्ठ करार दिया गया है संसार के उस श्रेष्ठ साहित्य (Classics) को भी विश्व साहित्य कहा जाता है.जैसे ,डिवाईन कॉमडी, डान कोहाटे, पैराडाइज लॉस्ट,शकुंतला कुमार संभव,आदि।

कतिपय तुलनात्मकतावादी आलोचकों के अनुसार अतीत की साहित्यिक कृतियों का, जिन्हें कालातीत प्रसिद्धि मिली है, जब तुलनात्मक अध्ययन होता है तब उस अध्ययन को तुलनात्मक विश्व साहित्य कहना ठीक है।गोयते ने यूरोप की परिधि को पार करके विश्व साहित्य के स्तर पर विश्व साहित्य की अवधारणा को प्रतिष्ठित किया।

भारतवर्ष में रवींन्द्रनाथ ठाकुर ने 1907 में तुलनात्मक साहित्य के लिए ,विश्वसाहित्य ,शब्द का प्रयोग किया था।अपने एक भाषण में उन्होंने कहा था कि यदि हमें उस मनुष्य को समझना है जिसकी अभिव्यक्ति उसके कर्मों,प्रेरणाओं तथा उद्देश्यों में होती है तो संपूर्ण इतिहास के माध्यम से हमें उसके अभिप्रायों से परिचित होना है।रवींन्द्रनाथ ने इसे स्पष्ट करते हुए आगे कहा है कि जिस प्रकार यह विश्व ज़मीन के टुकडों का योगफल नहीं है उसी प्रकार साहित्य विभिन्न लेखकों द्वारा रचित कृतियों का योगफल नहीं।राष्ट्रीयता की संकीर्ण मनोवृत्ति से अपने को मुक्त कर प्रत्येक कृति को उसकी संपूर्ण इकाई में देखना है और इस संपूर्ण इकाई या मनुष्य की शाश्वत सृजनशीलता की पहचान विश्व साहित्य के द्वारा ही हो सकती है। इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य और विश्व साहित्य में अंतर दिखाई नहीं पडता। रवींन्द्रनाथ के अनुसार तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के लिए हमें यह मानकर चलना होगा कि विश्व की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य एक संपूर्ण इकाई है क्यों कि असंख्य ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक अंतसंबन्धों से रचित विश्व साहित्य में इनकी खोज और अध्ययन ही तुलनात्मक साहित्य का कार्य है।

सामान्य साहित्य

सामान्य साहित्य और तुलनात्मक साहित्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए आर.ए.साइसी कहते है कि किसी भाषिक समाज की परवाह किए बिना साहित्य का अध्ययन सामान्य साहित्य है और पारस्परिक संबन्धों के आधार पर राष्ट्रीय साहित्यों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है।सामान्य साहित्य का प्रारंभिक अर्थ था, काव्यशास्त्र अथवा साहित्य-सिद्धान्त का अध्ययन।हॉर्स्ट फ्रेंच का भी कहना है कि सामान्य साहित्य से तात्पर्य है साहित्यिक प्रवृतियों, समस्याओं एवं सिद्धान्तों का सामान्य अध्ययन अथवा सौंदर्यशास्त्र का अध्ययन। तुलनात्मक साहित्य भी साहित्य सिद्धान्त अथवा काव्यशास्त्र का अध्ययन करता है मगर उसके अध्ययन की पद्धति तुलनात्मक होती है। सामान्य साहित्य इस प्रकार किसी पद्धति का निर्धारण नहीं करता।

वॉ टिगहेम के अनुसार तुलनात्मक साहित्य दो साहित्यों के आपसी संबन्धों के अध्ययन तक सीमित है,जबकि सामान्य साहित्य का संबन्ध उन आंदोलनों और फैशनों से है जो अनेक साहित्यों से प्रभावित दिखाई पडते है।राष्ट्रीय साहित्य की चारदीवारी के भीतर जो अध्ययन है वह राष्ट्रीय साहित्य है और इस चारदीवारी के परे साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है तथा दीवारों के ऊपर जो साहित्यिक अध्ययन है वह सामान्य साहित्य है।

तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र, भारतीय परिप्रेक्ष्य तथा भारतीय तुलनात्मक साहित्य

तुलनात्मक साहित्य की सर्वमान्य स्थूल परिभाषा यही हो सकती है कि यह साहित्यिक समस्याओं का अध्ययन है जहाँ एक से अधिक भाषाओं के साहित्य का उपयोग किया जाता है। फ्रान्सीसी-जर्मन तथा अमरीकी स्कूल के अनुसार इस प्रकार के अध्ययन के दो रूप है।एक में साहित्येतिहास को अध्ययन का प्रमुख आधार माना जाता है तथा दूसरे में कलापरक काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यमूलक तथा विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि के आश्रय से अध्ययन का प्रसार होता है।तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी संप्रदाय ने पारंपरिक रूप में निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया हैः

(क)विचार संप्रेषण की विधियाँ

(ख)अभिग्रहण तथा प्रभाव

(ग)साहित्यिक कथ्यों की विदेश-यात्रा

(घ)विभिन्न स्रोत

(ड़)किसी देश के साहित्य में दूसरे देश का चित्रण

रविनास ने तुलनात्मक साहित्य के बारे में कहा था कि विभिन्न साहित्यों के अन्योन्य प्रभावों से युक्त शोध ही तुलनात्मक साहित्य है-यह अंतराष्ट्रीय साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संबन्धों का अध्ययन है। इन विद्वानों की विचारधाराओं से दो तत्व स्पष्ट उभरकर कर सामने आते है।एक, यह सामान्य रूप से साहित्येतिहास का संपूर्ण अध्ययन है तथा दो,पारस्परिक प्रभाव-सूत्रों का मूल्यांकन तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण घटक है।

विकासवाद के आश्रय से साहित्य का अध्ययन काफी प्रामाणिक है जिसे पॉसनेट ने समझाते हुए कहा था कि साहित्य को निश्चय ही प्रारंभ,पराकाष्ठा तथा पतन की स्थितियों में से गुजरना पडता है।साहित्यिक विकासवाद तथा साहित्येतिहासवाद की दृष्टियों में सामान्यतःअंतर बहुत ही कम है क्योंकि इतिहासवाद तथा विकासवाद में अंतर वास्तविक की अपेक्षा शास्त्रीय अधिक है।नगेन्द्र ने शास्त्रीय दृष्टि के आधार पर इनके अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि विकासवाद की दृष्टि साहित्य में आध्यात्मिक तथा मनोवैज्ञानिक तत्वों की खोज है।आंदाल तथा मीराबाई के अर्थपूर्ण तुलनात्मक अध्ययन के लिए उनके ऐतिहासिक परिवेश को जानना बहुत ही ज़रूरी है।तुलनात्मक अध्ययन में एतिहासिक दृष्टि के पक्षधरों के लिए दो महायुद्धों के बीच का समय तुलनात्मक साहित्य का स्वर्णयुग था।इस समय कृतियों के साहित्यिक संबन्धों का बहुत ही ठोस तथा निश्चित उल्लेख किया गया और इनके समर्थन में सटीक संदर्भगत प्रमाण दिए गए।

अमरीकी स्कूल के प्रभावस्वरूप तुलनात्मक साहित्य का काव्यशास्त्रीय सौंदर्यमूलक तथा कलापरक परिप्रेक्ष्य काफी महत्वपूर्ण बनता चला जा रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य यही है कि किसी भी साहित्यिक कृति में निहित कलापरक स्वरूप को प्रकाश में लाना है।

इन दोनों संप्रदायों के आधार पर तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का

(1)पहला क्षेत्र है,काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन तथा साहित्य में काव्यशास्त्रीय सौंदर्यमूलक मूल्यों का प्रयोग और उनका कलापरक विश्लेषण।

(2)दूसरे क्षेत्र में साहित्यिक आंदोलनों का अध्ययन करते हुए मनोवैज्ञानिक,बौद्धिक या शैली वैज्ञानिक प्रवृत्तियों का विवेचन होता है।

(3)साहित्यिक विषयों के अध्ययन का एक तीसरा क्षेत्र है जहाँ साहित्य में अभिव्यक्त व्यक्तित्व या अमूर्त विचारों के विभिन्न रूपांन्तरों की विभिन्न दृष्टियों से प्रयोग का विश्लेषण होता है।

(4)काव्य रूपों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य में ,मृत्यु, पर दिए गए विचार को अमूर्त विचार से जुडा हुआ विषय कहा जा सकता है।

(5)साहित्यिक संबन्धों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य का पाँचवाँ क्षेत्र है।

जॉन फ्लेचर ने अपने निबन्ध ,The criticism of comparison, **तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र को निर्धारित करते हुए लिखा है कि इसके अंतर्गत निम्नलिखित विषय-क्षेत्र सम्मिलित किए जा सकते हैः**

(क)सांस्कृतिक देशांन्तरण का विशेष अध्यय।

(ख)विभिन्न लेखकों के पारस्परिक प्रभावों का विवेचन।

(ग)अनुवाद और गलत अनुवादों का विवेचन।

(घ)साहित्य तथा दूसरी कलाओं के पारस्परिक प्रभावों का विवेचन।

फ्रांकाय जॉस्ट (Francois Jost) **ने तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र की चार कोटियाँ बनाई हैं।उनके अनुसार यह विद्यानुशासन चार-आयामी अनुशासन है।**

(1) प्रथम कोटि के अंतर्गत उन कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है जिनमें जैवीय सादृश्यता मौजूद है।

(2) दूसरी कोटि के अंतर्गत आंदोलनों तथा प्रवृत्तियों जैसे भक्तिकाल,स्वच्छदतावाद, नवजागरण, यथार्थवाद,नई किता आदि का अध्ययन शामिल है।

(3) तीसरी कोटि के अंतर्गत साहित्यिक कृतियों की आंरिक तथा बाह्य संरचना तथा उनके काव्यरूपों का विश्लेषण होता है।

(4) चौथी कोटि के अंतर्गत साहित्यिक विषयवस्तु (themes**)तथा अभिप्रायों (**motifs**) का विश्लेषण अपेक्षित है।**

इन चार कोटियों के अतिरिक्त एक पाँचवीं कोचि भी है (5) **सिद्धान्त-अभिमुखी काव्यशास्त्र तथा कृति-अभिमुखी साहित्यालोचन का अध्ययन।**

भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारतीय या संस्कृत काव्यशास्त्र में साहित्य का अर्थ है, शब्द और अर्थ का सहभाव।शब्द और अर्थ का यह सहभाव विशेष प्रकार का सहभाव है जिससे काव्यभाषा का यह विशिष्ट सौंन्दर्य प्रकट होता है जो उसे सामान्य भाषा से अलग करता है।कुंतक का कहना है,विशिष्टम इव साहित्यिम् अभिप्रेतम,।इस ,विशेष, के रूप को निर्धारित करना एवं साहित्य में यह कैसे प्रकट होता है इसका विवेचन करना ही काव्यशास्त्र की मूल समस्या है।

किसी एक कृति के मूल्यांकन लिए यह आवश्यक है कि आलोचक अपने को कवि की स्थिति प्रस्तुत करें अथवा उसके दृष्टिकोण को ग्रहण करें।अगर कवि सृजन करता है तो आलोचक उसका पुनःसृजन करता है और चूँकि मूल्यांकनपरक क्रिया पुनःसृजनात्मक होती है,इसलिए वह अनिवार्य रूप से सृजनात्मक क्रिया के समरूप होती है।इनमें अंतर परिस्थितियों की असादृश्यता पर निर्भर है क्योंकि सृजनात्मक साहित्य निश्चयात्मक एवं आलोचना ग्रहणशील होती है।इसी को सामझाने केलिए संस्कृत काव्यशास्त्र में यह कहा गया है कि सृजनशील अंतश्चेतना प्रतिभा है और पुनः सृजनात्मक प्रतिभा ही आस्वाद है।जो आस्वाद करता है वही सहृदय है।अभिनव गुप्त ने यह स्पष्ट कहा था कि भाषा (संस्कृत) एवं शास्त्रीय ज्ञान के अतिरिक्त सहृदय में वह शक्ति अवश्य होनी चाहिए जिसकी सहायता से वह काव्यात्मक सृजन के साथ अपना तादात्म्य कर सके।

संस्कृत काव्यशास्त्र की सबसे बडी न्यूनता यही रही है कि इनसे कवि व्यक्तित्व के विश्लेषण के प्रति संपूर्ण निश्चेष्टता दिखाई जिसके फलस्वरूप इसका काव्यशास्त्रीय सौंन्दर्यपरक शास्त्र के रूप में सर्वतोमुखी विकास नहीं हो सका।वस्तुतः कवि कवि-व्यक्तित्व से ही कृति अपना विशिष्ट रूप या स्वतंत्र चरित्र प्राप्त करती है।वॉ टिगहेम के अनुसार तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में कवि व्यक्तित्व की सृजनात्मक क्रियाओं तथा प्रभावों का विवेचन होता है।इस प्रकार संस्कृत काव्यशास्त्र तुलनात्मक आलोचना को नकारता है जहाँ कोई एक कृति बूसरी कृति से क्यों भिन्न है अथवा क्यों एक ही लेखक की दो कृतियों में विभिन्नता आ जाती है आदि का विवेचन होता है।इसी के फलस्वरूप भारत में संस्कृत काव्यशास्त्र के आश्रय से तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का विकास नहीं हो सका।

भारतीय तुलनात्मक साहित्य

संस्कृत के सृजनशील कृतिकारों ने देशी भाषा में लिखित साहित्य के प्रति कोई रुचि नहीं दिखलाई और इसीलिए इस साहित्य की संस्कृत पटभूमिका को लेकर कोई रचना उपलब्ध नहीं है।हमारी आधुनिक भाषाओं के उद्भव के साथ-साथ इस दिशा में तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाएँ दिखाई पडी मगर फिर भी ब्राह्मणवाद से जुडे हुए

हमारे संस्कृत पांडित्य ने इस ओर कोई कदम नहीं बढाया।अंग्रेजी साहित्य के संपर्क में आने पर ही भारत में साहित्य के प्रति तुलनात्मक दृष्टि का वास्तविक प्रसार हो सका और इस कार्य में अंग्रेजी के माध्यम से दूसरे यूरोपीय साहित्य से भी हम परिचित हो सके।

यह निश्चित है कि अंग्रेजी साहित्य के प्रति हमारे आग्रह के फलस्वरूप हमारी साहित्यिक दृष्टि का विकास हुआ और हमने एक बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में साहित्य को ग्रहण करने की कोशिश की।हमारे आधुनिक साहित्यकारों ने पाश्चात्य साहित्य के संदर्भ में आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास की बात की और इस तरह तुलनात्मक दृष्टिकोण का प्रसार किया।बंगाल के विख्यात कवि माइकिल मधुसूदन दत्त,(1824-1873) ने एक ऐसे समन्वित साहित्य-जगत की कल्पना की थी जिसमें यूरोप तथा भारत के कव्यों को एक ही मंच पर स्थान दिया गया था।भारत में पहली दफा तुलनात्मक आलोचना के नई मॉडल का संकेत देनेवाले माइकेल ही थे।

सन् 1859 में मैक्सनूलर द्वारा रचित ,ए हिस्टरी ऑफ एनशेंन्ट संस्कृत लिटरेचर, में सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से संस्कृत तथा यूनानी साहित्य के इतिहास के अध्ययन की बात कही गयी है और दोनों के दृष्टिकोण को क्रमशःनिवृत्ति और प्रवृत्ति मूलक कहा गया है।मध्ययुगीन भारतीय साहित्य के अध्ययन में यूरोपीय विद्वानों ने सही मायने में भारतीय भाषाओं के विभिन्न साहित्यों के आश्रय से तुलनात्मक पद्धति का परिचय दिया था।

चाल्स.ई.ग्रोवर ने अपनी पुस्तक ,द फॉक सोग्स ऑफ सदर्न इंडिया,(1871) में तमिल साहित्य के साथ-साथ कन्नड,तेलुगु,मलयालम तथा कूर्ग भाषाओं में रचित गीतों का उल्लेख करते हुए इन्हें एक ही वर्ग की कविता प्रमाणित किया है।इस प्रकार के आलोचनात्मक फ्रेमवर्क के आधार पर जी.यू.पोप कुरल के अनुवाद की भूमिका में यह कहते है कि तमिल कविता में छोटे छोटे श्लोकों की सूक्तिनूमा संक्षिप्तता के साथ यूनानी सूक्तिबद्ध कविताओं की विषय वस्तु, अनुभूति तथा जिस सामाजिक परिवेश में ये कविताएँ लिखी गयी है उस परिवेश की तुलना की जा सकती है। तिरुवाचकम् तथा नालडियार, के अनुवाद की भूमिका में वे तमिल भाषा भाषी

विद्वानों से यह आग्रह करते है कि तमिल की कविताओं की वास्तविक आस्वाद के लिए अंग्रेजी में लिखित धार्मिक कविताओं से परिचित होना जरूरी है क्योंकि कोई भी साहित्य अपने-आप अलग खडा नहीं हो सकता।वस्तुतः1908 में कही गयी इस प्रकार की उक्तियों से ही भारतीय तुलनात्मक साहित्य की बुनियाद तैयार हुई थी।इस बीच भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ साथ इस शताब्दि के तीसरे दशक से भारतीय भाषाओं के साहित्य से संबन्ध शोधकार्य में तुलनात्मक साहित्य पद्धति की और भारतीय विद्वानों का ध्यान आकर्षित हुआ और प्रियरंजन सेन जैसे विद्वानों का ,इनफ्लुएन्स ऑफ वेस्टेर्न लिटरेचर इन द डेवेलेपमेन्ट ऑफ बंगाली नॉवल्स,(1932) जैसी तुलनात्मक शोध की पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं।

दरअसल तुलनात्मक साहित्य की आलोचनात्मक पद्धति से अपरिचित रहने के कारण अधिकतर भारतीय विद्वान इसके वास्तविक रूप को उभारने में असमर्थ रहे हैं फिर भी इस दिशा में बुद्धदेव बोस,नरेश गुहा,नगेन्द्र, आर.के.दास गुप्ता,बी.आलफॉन्से कारकल,बी.के.गोकाक,डा.हरभजन सिंह, एडवर्ड.सी.डिमॉक,जी.नोली,के.आर श्रीनिवास अय्यन्कार,सी.टी.नरसिम्माह,सुजित मुखर्जी,शिशिर दास,नवनीता देवसेन, फादर आंतोया,अमियदेव,इन्द्रनाथ चौधुरी आदि विद्वानों का कार्य सराहनीय रहा है।

आज तुलनात्मक साहित्य का प्रसार प्रचार पश्चिम से कहीं अधिक भारत में दिखाइ पडता है।भारत का बहुभाषिक देश होना इसका एक बहुत बडा कारण है।इसके अतिरिक्त उत्तर आधुनिक युग में अपनी भाषा के प्रति हरेक की सचेतनता का प्रसार होने से विभिन्न भाषाओं के साहित्य को विस्तार मिला है।भारत एक तुलनात्मक साहित्य क्षेत्र है और साहित्य के अध्ययन का तुलनात्मक होना भारत में एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।उत्तर आधुनिक देसीवाद से जुडी सचेतनता के विस्तार के फलस्वरूप भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के अंग्रेजी विभागों में भी तुलनात्मक साहित्य पद्धति के आश्रय से भारतीय साहित्य के अध्ययन अध्यापन को बल मिला है।

जवाब लिखिए-

1. **राष्ट्रीय साहित्य का अर्थ क्या है।**

   राष्ट्रीय साहित्य तुलनात्मक साहित्य की उन इकाइयों का संकेत देता है जिनकी सहायता से तुलनात्मक साहित्यानुशासन की बुनियाद तैयार होती है।

2. **तुलनात्मक साहित्य के संबन्ध में आर.ए साइसी का विचार स्पष्ट कीजिए।**

   आर.ए साइसी ने तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा था कि तुलनात्मक साहित्य विभिन्न राष्ट्रीय साहित्यों का एक-दूसरे के आश्रय से तुलनात्मक संबन्धों का अध्ययन है।

3. **विश्वसाहित्य** (Welt Literatur)**के संबन्ध गोयते का विचार क्या है।**

   गोयते ने विश्वसाहित्य (Welt Literatur)**के संदर्भ में राष्ट्रीय साहित्य की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि वेल्टलितरातुर अपनी साहित्यिक परंपराओं का बोध है। इस तरह विभिन्न राष्ट्र एक-दूसरे को पहचान या समझ सकते हैं**

4. **राष्ट्रीय तथा तुलनात्मक साहित्य के अंतर को व्यक्त कीजिए।**

   भौगोलिक दृष्टि से राष्ट्रीय तथा तुलनात्मक साहित्य में कोई स्पष्ट विभेदक रेखा खींचना मुश्किल है।पॉल वॉ टिगहेम का कहना है कि राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन मात्र एक ही साहित्य से संबन्धित प्रश्नों से अपना सरोकार रखता है और तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन दो साहित्यों से जुडी हुई समस्याओं का विश्लेषण करता है।क्रेग दा द्रेयर ( )तो इस अंतर को और भी स्पष्ट रूप से प्रकट करत् हुए कहते है कि राष्ट्रीय साहित्य की चारदीवारी के भीतर साहित्य का अध्ययन राष्ट्रीय साहित्य है और इस चारदीवारी के परे साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है।

5. **विश्व साहित्य का तात्पर्य क्या है।**

   अब विश्व साहित्य का तात्पर्य है पृथ्वी के किसी भी साहित्य का अध्ययन अर्थात् सार्विक स्तर पर साहित्य के इतिहास को ही विश्व साहित्य माना जाने लगा है।विश्व साहित्य का एक और अर्थ है कि केवल देश ही नहीं ,काल , के संदर्भ में भी जो महान है अर्थात् काल की कसौटी में जिसे श्रेष्ठ करार दिया गया है संसार के उस श्रेष्ठ साहित्य (Classics) **को भी विश्व साहित्य कहा जाता है**

6. रवींन्द्रनाथ के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का कार्य क्या है।

रवींन्द्रनाथ के अनुसार तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के लिए हमें यह मानकर चलना होगा कि विश्व की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य एक संपूर्ण इकाई है क्यों कि असंख्य ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक अंतसंबन्धों से रचित विश्व साहित्य में इनकी खोज और अध्ययन ही तुलनात्मक साहित्य का कार्य है।

7. विश्वसाहित्य के बारे में रवींन्द्रनाथ ठाकुर की दृष्टिकोण को व्यक्त कीजिए।

भारतवर्ष में रवींन्द्रनाथ ठाकुर ने 1907 में तुलनात्मक साहित्य के लिए ,विश्वसाहित्य ,शब्द का प्रयोग किया था।अपने एक भाषण में उन्होंने कहा था कि यदि हमें उस मनुष्य को समझना है जिसकी अभिव्यक्ति उसके कर्मों,प्रेरणाओं तथा उद्देश्यों में होती है तो संपूर्ण इतिहास के माध्यम से हमें उसके अभिप्रायों से परिचित होना है।रवींन्द्रनाथ ने इसे स्पष्ट करते हुए आगे कहा है कि जिस प्रकार यह विश्व ज़मीन के टुकडों का योगफल नहीं है उसी प्रकार साहित्य विभिन्न लेखकों द्वारा रचित कृतियों का योगफल नहीं।राष्ट्रीयता की संकीर्ण मनोवृत्ति से अपने को मुक्त कर प्रत्येक कृति को उसकी संपूर्ण इकाई में देखना है और इस संपूर्ण इकाई या मनुष्य की शाश्वत सृजनशीलता की पहचान विश्व साहित्य के द्वारा ही हो सकती है। इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य और विश्व साहित्य में अंतर दिखाई नहीं पडता।

8. सामान्य साहित्य के संबन्ध में आर.ए.साइसी का विचार क्या है।

सामान्य साहित्य और तुलनात्मक साहित्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए आर.ए.साइसी कहते है कि किसी भाषिक समाज की परवाह किए बिना साहित्य का अध्ययन सामान्य साहित्य है और पारस्परिक संबन्धों के आधार पर राष्ट्रीय साहित्यों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है।

9. **सामान्य साहित्य का प्रारंभिक अर्थ क्या था।**

सामान्य साहित्य का प्रारंभिक अर्थ था, काव्यशास्त्र अथवा साहित्य-सिद्धान्त का अध्ययन।

10. तुलनात्मक साहित्य व सामान्य साहित्य के बारे में वॉ टिगहेम की राय क्या है।

वॉ टिगहेम के अनुसार तुलनात्मक साहित्य दो साहित्यों के आपसी संबन्धों के अध्ययन तक सीमित है,जबकि सामान्य साहित्य का संबन्ध उन आंदोलनों और फैशनों से है जो अनेक साहित्यों से प्रभावित दिखाई पडते है।

11. तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी संप्रदाय ने पारंपरिक रूप में किन विषयों का अध्ययन किया है।

तुलनात्मक साहित्य के फ्रान्सीसी संप्रदाय ने पारंपरिक रूप में निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया है।

(क) विचार संप्रेषण की विधियाँ

(ख) अभिग्रहण तथा प्रभाव

(ग) साहित्यिक कथ्यों की विदेश-यात्रा

(घ) विभिन्न स्रोत

(ड़) किसी देश के साहित्य में दूसरे देश का चित्रण

12. तुलनात्मक साहित्य के बारे में रविनास की राय लिखिए।

रविनास ने तुलनात्मक साहित्य के बारे में कहा था कि विभिन्न साहित्यों के अन्योन्य प्रभावों से युक्त शोध ही तुलनात्मक साहित्य है।

13. तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र को निर्धारित करते हुए जॉन फ्लेचर की राय क्या है।

जॉन फ्लेचर ने अपने निबन्ध ,The criticism of comparison, **तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र को निर्धारित करते हुए लिखा है कि इसके अंतर्गत निम्नलिखित विषय-क्षेत्र सम्मिलित किए जा सकते हैः**

(क) सांस्कृतिक देशांन्तरण का विशेष अध्यय।

(ख) विभिन्न लेखकों के पारस्परिक प्रभावों का विवेचन।

(ग) अनुवाद और गलत अनुवादों का विवेचन।

(घ) साहित्य तथा दूसरी कलाओं के पारस्परिक प्रभावों का विवेचन।

14. फ्रांकाय जॉस्ट (Francois Jost**) ने तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र की कितनी कोटियाँ बनाई हैं। कौन-कौन सी हैं।**

फ्रांकाय जॉस्ट (Francois Jost**) ने तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र की चार कोटियाँ बनाई हैं।उनके अनुसार यह विद्यानुशासन चार-आयामी अनुशासन है।**

(1) प्रथम कोटि के अंतर्गत उन कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है जिनमें जैवीय सादृश्यता मौजूद है।

(2) दूसरी कोटि के अंतर्गत आंदोलनों तथा प्रवृत्तियों जैसे भक्तिकाल,स्वच्छदतावाद, नवजागरण, यथार्थवाद,नई किता आदि का अध्ययन शामिल है।

(3) तीसरी कोटि के अंतर्गत साहित्यिक कृतियों की आंरिक तथा बाह्य संरचना तथा उनके काव्यरूपों का विश्लेषण होता है।

(4) चौथी कोटि के अंतर्गत साहित्यिक विषयवस्तु (themes)तथा अभिप्रायों (motifs) का विश्लेषण अपेक्षित है।

15. भारतीय या संस्कृत काव्यशास्त्र में साहित्य का अर्थ क्या है, शब्द और अर्थ का सहभाव।

भारतीय या संस्कृत काव्यशास्त्र में साहित्य का अर्थ है, शब्द और अर्थ का सहभाव।

16. भारत में संस्कृत काव्यशास्त्र के आश्रय से तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का विकास नहीं हो सका - स्पष्ट कीजिए।

संस्कृत काव्यशास्त्र तुलनात्मक आलोचना को नकारता है जहाँ कोई एक कृति बूसरी कृति से क्यों भिन्न है अथवा क्यों एक ही लेखक की दो कृतियों में विभिन्नता आ जाती है आदि का विवेचन होता है।इसी के फलस्वरूप भारत में संस्कृत काव्यशास्त्र के आश्रय से तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का विकास नहीं हो सका।

UNIT –3

तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका

तुलनात्मक साहित्य का मूल उद्देश्य एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में साहित्य का अध्ययन करना है जिससे कि उसका उचित अभिज्ञान या रसास्वादन हो सके। इसकेलिए आवश्यक है कि इस अध्ययन में एक से अधिक साहित्य को सम्मिलित किया जाए, विशेष रूप में उन साहित्यों को जो राष्ट्रीय परिधि के बाहर विकसित हो रहे हैं। अतः विभिन्न भाषाओं के अनेक साहित्यों का विस्तृत ज्ञान इस अध्ययनके लिए जरूरी है। भारत में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के दो महत्वपूर्ण उद्देश्य हैः

1.एकक व्यवस्था स्तर पर एकल साहित्य के रूप में भारतीय साहित्य के इतिहास की अवधारणा का निर्माण बहुत ही जरूरी है।भारतीय साहित्य के इतिहास से तात्पर्य है,वैदिक, संस्कृत, पाली,प्राकृत,आदि साहित्य के साथ उर्दू तथा आधुनिक प्रान्तीय भाषाओं में रचित साहित्य। इनके अंतर्गत भारतीयों के द्वारा रचित अंग्रेजी साहित्य को भी सम्मिलित किया जाता है।इन सब साहित्यों के द्वारा भारतीय साहित्य के विशाल रूप का निर्माण हुआ है।वर्तमान समय में विस्तृत तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक स्तर पर विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन हो रहा है।एकक साहित्य के रूप में भारतीय साहित्य की अवधारणा निर्माण तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के आश्रय से ही पूरा किया जा सकता है।

2.भारतवर्ष में तुलनात्मक साहिय के अध्ययन का दूसरा उद्श्य है, पाश्चात्य साहित्य के बारे में एक समुचित विचारधारा का विकास।भारत में सर्वाधिक प्रचलित विदेशी भाषा होने के कारण भारतीय विद्यार्थी पाश्चात्य साहित्य को मात्र अंग्रेजी या इंगलैंड के माध्यम से जान पाता है।पर इससे मुक्ति पाने के लिए एकमात्र उपाय यही है कि अंग्रेजी के अतिरिक्त दूसरी विदेशी भाषाओं में रचित पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन-अध्यापन किया जाए।इसकेलिए तुलनात्मक साहित्य ही काम आता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत नाना भाषाओं में रचित साहित्याध्ययन एवं उससे संबन्ध अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के लिए बहुत सी भाषाओं को पढना कोई आसान काम नहीं है इसलिए अनुवाद के माध्यम से साहित्य का अध्ययन हम कर सकते हैं।पर कुछ लोग यह मानते हैं कि अनुवादों के माध्यम से साहित्याध्ययन असंभव है।पर यह पूर्ण रूप से ठीक भी नहीं है।क्योंकि तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में दो भाषाओं के ज्ञान के अतिरिक्त साहित्य के विभिन्न पक्षों के विश्लेषण के लिए विभिन्न देशों की भाषाओं में किए गए अनुवादों की जरूरत है।

बिलहॉम वॉन हमबॉल्ट ने अनुवाद कार्य को साहित्य के लिए आवश्यक माना है।इससे एक देश के रहनेवाले दूसरे देश की कला और मानवता से परिचय होते है तथा कोई एक भाषा-भाषी वर्ग अर्थ और अभिव्यक्ति के नए प्रयोगों से परिचित होकर अपने ज्ञान के क्षितिज का विस्तार कर पाता है।बांगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र के उपन्यासों के अनुवाद भारत के दूसरे प्रान्तों में इस प्रकार से देशीकृत हो चुके हैं कि उत्तर प्रदेश, गुजरात, आंन्ध्र, आदि प्रान्तों में उन्हें उसी भाषा का उपन्यासकार माननेवासों की संख्या अभी भी काफी है।रवींन्द्रनाथ ठाकुर के काव्यानुवादों से तीसरे तथा चौथे दशक के भारत के संदर्भ में,अनुवाद कला से परिचित होना नितांत आवश्यक है।

अनुवादों का प्रभाव लेखकों की सृजन प्रक्रिया पर पडता है।बालजाक के Engenie Grandet **के अनुवाद को पढकर ही दस्तोवस्की ने अपना साहित्यिक जीवन शुरू किया ता।आर्थर वेले की चीनी तथा जापानी कविताओं के अनुवादों को पढकर ही ब्रेश्ट की काव्य संवेदना का विस्तार हुआ था।अनुवाद साहित्यिक आंदोलन और काव्य रूपों को भी प्रभावित करता है।नौवालिस ने श्लेगल को लिखे एक पत्र में जर्मन रोमांटिक आंदोलन के प्रसार में अनुवाद की भूमिका का विस्तार से विवेचन किया है।**

कैटफोर्ड के अनुसार अनुवाद का मतलब है -स्रोतभाषा की पाठ-सामग्री को लक्ष्यभाषा की समानांतर पाठ-सामग्री से प्रतिस्थापन ही अनुवाद है।कैटफोर्ड ने अनुवाद

की इस परिभाषा को प्रस्तुत करते हुए आगे चलकर,यह कहा है कि प्रतिस्थापन का अर्थ स्थानांतरण नहीं क्योंकि स्थानांतरण में प्रतिष्ठापन की भावना निहित रहती है।प्रतिस्थापन का वास्तविक अर्थ है, स्रोत भाषा के व्याकरण और शब्द भंडार का लक्ष्यभाषा के व्याकरण और शब्द-भंडार से प्रतिस्थापन करना तथा इसके परिणामस्वरूप स्रोतभाषा की स्वनप्रक्रिया और,ग्राफोलॉजी का लक्ष्यभाषा की स्वनप्रक्रिया और ग्राफोलॉजी से प्रतिस्थापन होता है।यहाँ प्रतिस्थापन का अर्थ तुल्य मानों के द्वारा प्रतिस्थापन नहीं है।क्योंकि भाषा का व्याकरण,शब्द-भंडार,स्वनप्रक्रिया तथा ग्राफोलॉजी आदि एक संस्कृति का पैटर्न के आश्रय से विकसित होती है जो जाति,परिवेश तथा समय के द्वारा प्रभावित होता है इसलिए अनुवाद तुल्यमानों का प्रतिस्थापन नहीं।विषय एवं स्रोत तथा लक्ष्य भाषाओं के ज्ञान के आधार पर अर्थ को ह्रदयंगम करके उसे लक्ष्यभाषा में डालने एवं उसकेलिए कोशगत संबन्धों के साथ-साथ संदर्भगत संबन्धों का पता लगने पर ही सही अर्थ या संदर्भगत अर्थ का पता लग पाता है।

अनुवाद सृजन नहीं, मात्र अनुकरण है- इस धारणा को लेकर पता नहीं कितने युगों से विद्वानों में मतभेद चलता आ रहा है।हेनरी गिफोर्ड का कहना कि साहित्य एक सृजनात्मक क्रिया है मगर अनुवाद तैलचित्र के समान उस सृजन का सफेद-काले में पुनरुत्पादन के सिवाय और कुछ नहीं।दरअसल यह बात स्वीकार्य है कि जिस समय कवि-कल्पना अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ काम करती है कि कोई भी अनुवाद उस सृजन की बराबरी नहीं कर सकता।अनुवादक के सामने दो समीकरण होते है जिनमें से उसे अनुवाद -कार्य केलिए एक को चुनना पडता है।पहला समीकरण हैः क-ख=मूल के अधिक निकट।यहाँ क से तात्पर्य है मूल कृति और ख से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल के जो तत्व लोप हो जाते हैं।यह समीकरण मूल के अधिक निकट होता है।दूसरा समीकरण हैः क-ख+ग=मूल से दूर।यहाँ ग से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल में जो तत्व अनुवादक की ओर से संयोजित होते हैं।साहित्यानुवाद के लिए दूसरा और वैज्ञानिक अनुवाद के लिए पहला समीकरण अपेक्षित है। अनुवादक का काम न तो सृजनात्मक है और नहीं वह अनुकरणात्मक कला है।अनुवादक कभी-कभी

इस तथ्य से अपरिचित रह जाते हैं कि अनुवाद-कार्य व्याख्या-विश्लेषण का कार्य है।यह एक सृजनात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुवादक को लेखक की दुनिया को फिर से जीना होता है।

मूल लेखक और अनुवादक में अंतर के दो कारण हैः एक, अनुवादक का अभिव्यक्ति का अपना ही ढंग होता है, उसको शैली अपनी होती है जो उसके व्यक्तित्व और युगबोध पर आश्रित होती है। दूसरा,स्रोतभाषा में रूप और अर्थ का विधान लक्ष्यभाषा के रूप और अर्थ के अनुरूप हो सकता है मगर वह कभी भी एक समान नहीं होता। मगर अनुवाद करते हुए कोशिश यही होनी चाहिए कि लक्ष्यभाषा में एक ओर मूल का स्वाद बरकरार रहे और दूसरी ओर अनुवाद सुगमता और आनंद से पढा जाए।मगर अनुवादक के व्यक्तित्व तथा युगबोध के कारण उसकी भाषा के प्रयोग में वैचारिक,जातिगत, तथा भाषिक शक्तियों का प्रभाव उभर आता है जिसके फलस्वरूप विभिन्न अनुवादों में हमें विभिन्न आस्वाद प्राप्त होते हैं।

अनुवादक मूलतः स्रोतभाषा की मूल संरचना को लक्ष्यभाषा की मूल संरचना में बदलता है।इस कार्य में उसे अनुवाद के पाँच सोपानों का प्रयोग करना पडता हैः(क) स्रोत तथा लक्ष्यभाषा का ज्ञान (ख) पाठ या विषय का पूरा परिचय, (ग) विश्लेषण (घ) प्रतिस्थापन, तथा (ङ)अनुवाद की सहायता से पाठ का संरचनात्मक पुनःनिर्माण।इस

जवाब लिखिएः

1. अनुवादक के सामने दो समीकरण होते है जिनमें से उसे अनुवाद -कार्य केलिए एक को चुनना पडता है।वे समीकरण कौनसी है।

अनुवादक के सामने दो समीकरण होते है जिनमें से उसे अनुवाद -कार्य केलिए एक को चुनना पडता है।पहला समीकरण हैःक-ख=मूल के अधिक निकट।यहाँ क से तात्पर्य है मूल कृति और ख से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल के जो तत्व लोप हो जाते हैं।यह समीकरण मूल के अधिक निकट होता है।दूसरा समीकरण हैःक-ख+ग=मूल से दूर।यहाँ ग से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल में जो तत्व अनुवादक की ओर से संयोजित होते हैं।

2. **मूल लेखक और अनुवादक में अंतर के कारण क्या हैः**

मूल लेखक और अनुवादक में अंतर के दो कारण हैः एक, अनुवादक का अभिव्यक्ति का अपना ही ढंग होता है, उसको शैली अपनी होती है जो उसके व्यक्तित्व और युगबोध पर आश्रित होती है। दूसरा,स्रोतभाषा में रूप और अर्थ का विधान लक्ष्यभाषा के रूप और अर्थ के अनुरूप हो सकता है मगर वह कभी भी एक समान नहीं होता।

3. अनुवाद के पाँच सोपान क्या है।

अनुवाद के पाँच सोपान हैं (क) स्रोत तथा लक्ष्यभाषा का ज्ञान (ख) पाठ या विषय का पूरा परिचय, (ग) विश्लेषण (घ) प्रतिस्थापन, तथा (ङ)अनुवाद की सहायता से पाठ का संरचनात्मक पुनःनिर्माण।

4. कैटफोर्ड के अनुसार अनुवाद का मतलब क्या है।

कैटफोर्ड के अनुसार अनुवाद का मतलब है –स्रोतभाषा की पाठ-सामग्री को लक्ष्यभाषा की समानांतर पाठ-सामग्री से प्रतिस्थापन ही अनुवाद है।

5. बिलहॉम वॉन हमबॉल्ट ने अनुवाद कार्य को साहित्य के लिए आवश्यक माना है।क्यों।

बिलहॉम वॉन हमबॉल्ट ने अनुवाद कार्य को साहित्य के लिए आवश्यक माना है।क्यों कि इससे एक देश के रहनेवाले दूसरे देश की कला और मानवता से परिचय होते है तथा कोई एक भाषा-भाषी वर्ग अर्थ और अभिव्यक्ति के नए प्रयोगों से परिचित होकर अपने ज्ञान के क्षितिज का विस्तार कर पाता है।

UNIT -4

हिन्दी और मलयालम में तुलनात्मक साहित्य

आधुनिक भारत के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दि पुनर्जागरण का प्रतिफलन है। राजा राममोहनराय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, केशवचन्द्र सेन, स्वामि विवेकानन्द, आदि विचारकों और साधकों ने भारत के जन-मानस में जिस उत्थानमूलक आन्दोलन को जन्म दिया था वह उन्नीसवीं शताब्दि में व्यापक स्तर पर फैलता गया था। धार्मिक और सामाजिक सुधारवादी भूमिका से बढकर वह पहले अतीत गौरव का केन्द्र बना, तदनन्तर नैतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान होता गया। इसी क्रम में राजनीतिक चेतना का उदय हुआ।राष्ट्रीयता की भावना स्वदेश प्रेम के रूप में प्रस्फुटित हुई।इस नवीन उन्मेष को वाणी देने और जन साधारण तक पहूँचने का दायित्व भारत के साहित्यकारों ने वहन किया।भारत की प्रत्येक भाषा में बीसवीं शती में ऐसे कवियों और लेखकों का जन्म हुआ जिन्होंने अपनी अपनी भाषाओं में सुन्दर तथा श्रेष्ठ रचनाएं प्रस्तुत करना प्रारंभ किया।भारत की प्रायः सभी भाषाओं में बडे-बडे प्रतिभावान, सक्षम एवं श्रेष्ठ कवि उत्पन्न हुए।इन कवियों की दृष्टि सुधार परक नैतिक जागरण से आगे बढकर समाज, जगत्, प्रकृति,अध्यात्म,दर्शन, राजनीति आदि विविध विषयों पर गई और उन्होंने कविता को जगत् और जीवन के व्यापक क्षितिज तक व्याप्त कर दिया।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में बीसवीं शती के दूसरे दशक में एक नयी शैली की कविता का सूत्रपात हुआ। यह कविता सपाट बयानी से हटकर लाक्षणिकता और आदर्श की नैतिक शब्दावली को छोडकर रहस्य, अध्यात्म, प्रेम प्रकृति मनोजगत् और सौन्दर्यवर्णन को लेकर चली थी।जगत् के दृश्यमान पदार्थों पर अध्यात्मपरक दृष्टि से चेतन सत्ता का आरोप कर वर्णन करना इस शैली की कविता में प्रमुख हो गया था।रोमांन्टिक काव्यप्रवृत्तियां भी इस काव्य में व्याप्त थी।फलतः इस शैली की कविता का नाम हिन्दी में छायावाद हो गया।इस शैली की प्रमुख कवियों में प्रसाद,पंत, निराला और महादेवी का नाम आता है।इन कवियों में श्री सुमित्रानंदन पंत प्रकृति प्रेमी,सौन्दर्य प्रेमी,अध्यात्म प्रेमी के रूप में विख्यात हैं।उन्होंने छायावाद को प्रतिष्ठित करने में सर्वाधिक योग दिया।

पंत और जी शंकर कुरुप

सुमित्रानंदन पंत का जन्म हिमालय के अल्मोड़ा जिल्ले के कौसानी ग्राम में हुआ था।पंत जी की पहली कविता गिरजे का घंटा सन् 1916 की रचना है। तब से वे निरंतर काव्य साधना में तल्लीन हैं।उनके काव्य ग्रंथ हैं -उच्छवास,ग्रंथि, वीणा, चिदंबरा,पल्लव, और गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजतशिखर, वाणी, पतझर आदि।चिदंबरा पर 1968 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें प्राप्त हैं।

पंत जी की काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है। पंतजी की कविता हिन्दी साहित्य में लाक्षणिकता एवं व्यंजकता की श्रेष्ठ निदर्शन है।पश्चिम में सिम्बोलिज्म नाम से कविता के क्षेत्र में एक शैलीगत आन्दोलन चला था।रोमान्टिसिज्म और सिम्बोलिज्म दोनों शैलियों के सन्तुलित समाहार से जो रोमानी शैली पंत जी ने हिन्दी कविता को दी वह लक्षणा एवं व्यंजना के योग से अत्यंत समृद्ध तथा आकर्षक बन गयी है।

गोविन्द शंकर कुरुप या जी शंकर कुरुप मलयालम भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। उनका जन्म केरल में हुआ था। महाकवि कालिदास की कविताओं से प्रभावित होकर वे काव्य के क्षेत्र में आये। अध्यापन कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन किया। उनकी प्रसिद्ध रचना ओटक्कुषल अर्थात बाँसुरी ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा सम्मानित हुइ है।

साहित्य कौतुकम् ,सूर्यकांति ,निमिषम्, चेंकतिरुकल् मुत्तुकल्, वनगायकन् ,इतलुकल् ,ओटक्कुषल, पथिकंटे पाट्टु, वेल्लिलप्परवकल्, विश्वदर्शनम् ,जीवन संगीतम् ,मून्नरुवियुम् ओरु पुष़युम् ,पाथेयम् , ,मधुरम् सौम्यम् दीप्तम्, वेलिच्चत्तिंटे दूतम्, सान्ध्यरागम् आदि इनकी कुछ रचनाएं है। पंत और जी हिंदी और मलयालम के काल्पनिक कवि है।दोनों की कविताओं में रहस्यवाद है।जी की कविता न्वेषण में टागौर के सौंन्दर्यवाद का प्रभाव है।जो कवि को लौकिक दुनिया से अलौकिकता की ओर ले जाता है।पंत की कविता मौननिमंत्रण की प्रत्यक्ष जगत की वस्तुओं के पीछे अलौकिक अज्ञात सत्ता का दर्शन है।टागौर ने अनेक प्रार्थना गीत लिखे है।इससे प्रभावित होर पंत और जी ने बराबर प्रार्थना गीतों की रचना की।

मलयालम के कवियों में जी शंकर कुरुप का काव्य भी पंत जी के सदृश उसी प्रकार समृद्ध एवं प्रतीक योजना से आपूर्ण है।दोनों महाकवि प्रतीक -योजना में कुशल होने के साथ भाव और विचारभूमि में भी व्यापक वैविध्य रखते हैं। जी शंकर कुरुप बिम्बों और प्रतीकों के कवि हैं। इन्होंने परम्परागत छन्द विधान और संस्कृत निष्ठ भाषा को अपनाकर अपने चिन्तन से काव्य बिम्बों के अनुरूप उसका प्रयोग किया था।यह प्रतीक योजना पंतजी की कविताओं में भी समान रूप से विद्यमान है।पंतजी और जी शंकरकुरुप को इस प्रकृति ने सम्मोहित किया और यही प्रकृति उनके काव्य-सृजन में प्रेरणास्रोत हुई।

प्रकृति के सौम्य और उग्र रूप से दोनों कवि सचेत रहे थे और आकृष्ट भी।पंतजी का विचार यह था कि प्रकृति के सुन्दर रूप ही उसे अधिक लुभाया था।पर उसका उग्र रूप भी उन्होंने परिवर्तन नामक कविता में चित्रित किया था। प्रकृति की संहारक शक्ति का जी ने भी पंत की ही तरह चित्रण किया है।प्रकृति ने इन दोनों कवियों में रहस्यभावना भर दी।बाद में उससे जनित जिज्ञासा का समाधान ढूँढते हुए उपनिषद आदि भारतीय दर्शन की ओर झुके।पंत और कुरुप के प्रारंभिक जीवन और उस काल के जीवन से प्राप्त प्रेरणास्रोतों में असाधारण साधर्म्य प्राप्त होता है।

प्रकृति के अनन्त सुषमामय स्वरूपों के चित्रण जी ने साहित्य कौतुकं की कविताओं द्वारा किया है।पंत की वीणा, पल्लव की कविताएँ इसी गुण से युक्त है। पंतजी की परिवर्तन संज्ञक कविता और जी की कला से संबन्धित वृक्ष प्रतीक, अश्वप्रतीक, और सर्प प्रतीक कविताएँ और निमिष नामक कविता इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

प्रेमचंद और तकषि शिवशंकरपिल्लै

प्रगतिवाद रचना और आलोचना के क्षेत्र में सर्वथा नवीन दृष्टिकोण लेकर आया।प्रगतिवादी साहित्य के उद्भव और विकास में राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय परिस्थितियाँ तो सहायक हुई, साथ ही छायावाद की जीवनशून्य होती हुई व्यक्तिवादी वायवी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी उसमें निहित थी।एक ओर भारतीय समाज में उभरता हुआ जनसंकट था,तो दूसरी ओर रूस में मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर

स्थापित साम्यवाद था, जो वहाँ के विषम संकट और संधर्ष से गुजरे जनजीवन को बल दे रहा था और जो सामंतवाद और पूँजीवाद की विभीषिकाओं को कुचल कर सर्वहारा का अधिनायकत्व स्थापित कर रहा था।भारतीय बुद्धिजीवी एक ओर अपने समाज में उत्पन्न अनेक सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक, राजनीतिक विसंगतियों और संकटों को देख रहा था, दूसरी ओर वह रूस के उस समाज को देख रहा था जो इनसे गुजर कर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित कर रहा था, जिसमें सामान्य जनजीवन को महत्ता प्राप्त हो रही थी।रूस में प्रतिष्ठित साम्यवाद और पश्चिम के अन्य देशों में फैलता हुआ उसका मार्क्सवादी दर्शन भारतीय बुद्धिजीवियों के लिए प्रेरणा-केंन्द्र बन रहा था।

हमारा राष्ट्रीय वातावरण नवीन परिस्थितियों के कारण एक नये प्रकार के युयुत्साभाव से आंदोलित हो रहा था।राजनीतिक दासता देश में एक ओर पूँजीवाद और सामंतवाद की शोषक शक्तियों को प्रेरणा दे रही थी, दूसरी ओर जनसामान्य केलिए अपार भयावह गरीबी, अशिक्षा, असुविधा, और अपमान की सृष्टि कर रही थी।इसके अतिरिक्त अकाल और युद्ध की भीषण विभीषिकाएँ भी देश को खा रही थी।साहित्य भी उससे प्रभावित हुआ और प्रगतिवादी साहित्य का आंदोलन आरंभ हुआ।सन् 1935 में ई.एम फोस्टर के सभापतित्व में पेरिस में प्रोग्रसीव राइटेर्स एसोसियेशन नामक अंतराष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ।सन् 1936 में सज्जाद जहीर और डॉ मुल्कराज आनंद के प्रयत्नों से भारतवर्ष में भी इस संस्था की शाखा खुली और प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ में प्रथम अधिवेशन हुआ।

छायावादोत्तर युग हिंदी- गद्य की सर्वांगीण उन्नति का युग है। का युग है। इस युग के लेखकों ने कहानी,उपन्यास,आलोचना,आदि क्षेत्रों में नये आयामों का उद्घाटन किया था।स्वाधीनता प्राप्त करने से पूर्व जहाँ साहित्यकारों ने राष्ट्रीय चेतना पर बल दिया,वहीं स्वातन्त्र्योत्तर साहित्य में नवनिर्माण पर बल दिया गया।इस युग में गद्य ही जनजीवन की अभिव्यक्ति का सर्वप्रमुख साधन रहा। फलतः गद्य साहित्य का सीमातीत विस्तार हुआ।कथ्य की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा नए प्रतीक,उपमान,अथवा बिंब ही प्रयुक्त नही हुए ,अपितु फलैशबैक,चेतना-प्रवाह आदि

शैलियों का भी प्रयोग किया गया।कथानक को गौण मानने तथा पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने की प्रवृत्तियों के फलस्वरूप वर्तमान लेखक मानव -मन के सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में सफल हो सके हैं।समग्रतः इस युग का गद्य साहित्य कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से पर्याप्त वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध है।

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के युगनिर्माता साहित्यकार है। प्रेमचंद युग से ही हिन्दी उपन्यास साहित्य जाना जाता है। सेवासदन,प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि,गोदान आदि इनके उपन्यास हैं,और बलिदान, बूढी काकी, परीक्षा, शतरंज के खिलाडी, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, कफन आदि इनके कुछ कहानियाँ हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है।इनमें सबसे प्रमुख वर्ग है- किसानों का, जो मुख्यतः गांवों में रहता था।

1912 में केरल के आलप्पुषा जिले में तकषि शिवशंकरप्पिल्लै का जन्म हुआ था।मलयालम साहित्य में तकषि भी प्रेमचंद की तरह युगनिर्माता साहित्यकार के रूप में जाना जाता है।कुट्टनाड के इतिहासकार के नाम से ये विश्व प्रसिद्ध है। इन्होंने लगभग छः सौ से अधिक कहानियाँ और उनचालीस उपन्यास लिखे हैं। इनके चेम्मीन अर्थात् मछुआरा नामक उपन्यास का अनुवाद कई देशी और विदेशी भाषाओं में हो चुके हैं।रण्डिडङ्गषि, एणिप्पडिकल, कयर,तोट्टियुटे मकन्,अनुभवङ्गल पालिच्चकल, त्यागत्तिन्टे प्रतिपलम, अञ्चुपेण्णुङ्गल आदि इनके अन्य उपन्यास हैं।इसके अतिरिक्त एक नाटक, यात्राविवरण, तीन आत्मकथाएं आदि भी इन्होंने लिखे हैं।साहित्य के लगभग सभी क्षेत्रों को इन्होंने छुआ है।

प्रेमचंद की रचना काल की तरह तकषि की रचनाकाल भी केरल में सामंती प्रथा का समय था।नौकर शाही, रिश्वतखोरी, शोषण और दमन के चक्र में आम जनता पिस रही थी।राज शासन के विरुद्ध, काँग्रस और साम्यवादियों का संघर्ष हो रहा था।इन अत्याचारों के खिलाफ जन आंदोलन हुए लेकिन उसको दबाने का काम सरकार की ओर से हो रहा था।केरल में पुन्नप्रवयलार में जो आंदोलन हुए उनमें सरकार के सिपाहियों ने जनता पर गोलियों की वर्षा की।इस आंदोलन में हजारों लोग मारे गए,1957 के चुनाव में कांग्रस को पराजित कर के साम्यवादी दल सत्ता में

आया।साम्यवादी सरकार ने शिक्षा और खेती के क्षेत्र में अनेक प्रगतिशील व उपयोगी कानून बनाए।इस परिस्थितियों का प्रभाव तकषि के साहित्य पर भी पडा था।

तकषि के समय में समाज दो वर्गों में विभाजित था-उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग।तकषि की रचनाओं में समाज के निम्नवर्ग जैसे मच्छुआरा, भंगी, चमार, आदि का चित्रण है।इनके प्रसिद्ध उपन्यास चेम्मीन, मच्छुआरों के जीवन का यथार्थ चित्रण है।सागर एवं सागर तट इनके जीवन से कितना जुडा हुआ है इसका चित्रण हृदय को छूनेवाला ही है। रण्डिडग्डषि अर्थात् दो सेर दान उपन्यास में कुट्टनाड के मजदूरों का जीवन संघर्ष व वहाँ की परिस्थितियाँ चित्रित है। समाज के शोषित वर्ग के प्रति ये जितना सजग व संवेदनशील था उतनी नारियों के प्रति भी थे।नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है। मच्छुआरे उपन्यास की चक्की अञ्चुपेन्नुङगल की जानकी त्यागत्तिन्टे प्रतिफलम की पारुक्कुट्टि अम्मा आदि नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करने वाली है।इन्होंने साहित्य के द्वारा साम्यवादी विचारधारा का प्रचार प्रसार किया है और इनके उपन्यासों में केरलीय जनजीवन का सही चित्रण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है।

तकषि के समान प्रेमचंद भी मानवतावादी विचारों से युक्त साहित्यकार थे।चारों ओर फैले हुए जीवन र अनेक सामयिक समस्याओं - पराधीनता, जमींदारों, पूँजीपतियों और सरकारी कर्मचारियों द्वारा किसानों का शोषण, निर्धनता ,अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज की कुप्रधा, घर और समाज में नारी की स्थिति, वेश्याओं की जिंदगी, वृद्ध विवाह, विधवा समस्या, सांप्रदायिक वैमनस्य, अस्पृश्यता, मध्यमवर्ग की कुंठाएं आदि ने उन्हें उपन्यास -लेखन के लिए प्रेरित किया था। सेवासदन में विवाह से जुडी समस्याओं और समाज में वेश्याओं की स्थिति पर रहा। निर्मला में दहेज प्रथा और वृद्ध विवाह, प्रेमाश्रम और गोदान में कृषक जीवन की समस्यायें, रंगभूमि और कर्मभूमि में ग्रामीणों की स्थिति आदि का चित्रण कर प्रेमचंद ने उस समय के समाज यथार्थ चित्रण आदर्श के साथ प्रस्तुत किया है।

ये दोनों साहित्यकार सामाजिक यथार्थ के सरोकार थे और भाषाओं में अंतर होते हुए भी इनमें अतिशय समानताएँ है। दोनों मानवतावादी थे और नारी के

प्रति इनका दृष्टिकोण उच्च व प्रगतिशील थे। समाज के हर क्षेत्र के नारियों के प्रति ये संवेदनशील रहे थे।दोनों की रचनों में दलित चेतना और नारी चेतना की शुभारंभ दिखाई पडती थी।ये दोनों अपनी मानवतावादी विचारों से समाज को ऊपर उठाने की कोशिश में थे इसलिए इन्हें युगनिर्माता साहित्यकार के रूप में प्रासंगिक भी है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय और अय्यप्प पनिक्कर

प्रयोग तो प्रत्येक युग में होते ये हैं, किन्तु प्रयोगवाद नाम उन कविताओं के लिए रूढ हो गया हैं, जो कुछ नये बोधों,संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करने वाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू- शुरू में तार सप्तक के माध्यम से सन् 1943 में प्रकाशन-जगत् में आयीं, और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयीं तथा जिनका पर्यवसान नयी कविता में हो गया। नयी कविता भारतीय स्वतंन्त्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से गे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प विधानों का अन्वेषण किया गया।नयी कविता में क्षणों की अनुभूतियों को लेकर बहुत -सी मर्मस्पर्शी और विचार- प्रेरक कविताएं लिखी गयी हैं।नयी कविता जीवन के एक- एक क्षण को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है।इस कविता का परिवेश अपने यहाँ का जीवन है।

डॉ. के अय्यप्प पनिक्कर का जन्म 1930 में केरल के आलप्पुषा जिल्ले में हुआ था।उच्च शिक्षा अमरिका से लेकर ये अंगेजी के प्राध्यापक रहे थे। मलयालम कविता को आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता की ओर ले जाने में का श्रेय इनको ही है। आधुनिक मलयालम कविता का सूत्रपात 1960 में प्रकाशित पनिक्कर की कुरुक्षेत्र नामक कविता से ही माना जाता है। सर्व इन्द्रियों को छूना ही काव्य अनुभूति है ऐसा वह मानते थे ।ये कवि के साथ-साथ प्रसिद्ध आलोचक भी थे।उन पुरानी मान्यताओं से कविता को बाहर निकालकर नयी राहों से चलाना ही उनका लक्ष्य रहा था।निरंतर नवीन प्रयोगों व कोशिशों से इन्होंने मलयालम कविता को विश्व साहित्य मे स्थान दिलाया।अनेकों विश्व साहित्य सम्मेलनों में मलयालम का प्रतिनिधित्व कर अपनी भाषा को वैश्विक मान दिलाया था।

एन्टे भित्तिमेल, ओरु सर रियलिस्ट प्रेमगानम्, कुट्टनाडन दृश्यङ्गल, कुरुक्षेत्रम्, श्याममम्, मृत्युपूजा, कुटुंब पुराणम्, गोत्रयानम्, वला, कन्नम्मा, शत्रुभयम्, वीडियो मरणम्, दुखमो सखी, पूक्कातिरिक्कानेनिक्कावतिल्ले आदि इनकी कुछ कृतियाँ हैं।इनके अतिरिक्त इन्होंने कई लेख व आलोचनात्मक पुस्तकें भी लिखे हैं।

अज्ञेय का जन्म देवरिया में हुआ था।शिक्षा के बाद ये जोधपुर विश्वविद्यालय में कार्यरत थे।कई बार सांस्कृतिक कार्यों के लिए अमरिका गये थे।कवि के साथ-साथ ये प्रख्यात कथाकार, समीक्षक और चिंतक-विचारक भी हैं।तारसप्तक,दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक औ र रूपांबरा इनके संपादित काव्य संकलन है।ये प्रयोगवाद और नयी कविता के विशिष्ट कवि हैं।उनका स्वर अहं से लेकर समाज तक, प्रेम से लेकर दर्शन तक,आदिम गंध से लेकर विज्ञान की चेतना तक, यंत्र- सभ्यता से लेकर लोक-परिवेश तक, यातना बोध से लेकर विद्रोह की ललकार तक, प्रकृति सौंन्दर्य से लेकर मानव सौन्दर्य तक फैला हुआ है।अज्ञेय में संवेदना के साथ एक सजग बौद्धिकता है।

इत्यलम,हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनु रौंदे हुए थे, अरी ओ करुणा प्रभामय, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, सागरमुद्रा, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ,पहले सन्नाटा बुनता हूँ आदि इनकी प्रसिद्धकाव्य रचनाएँ हैं और शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी इनके तीन उपन्यास हैं।त्रिशंकु, आत्मनेपद, और हिंदी साहित्यःएक आधुनिक परिदृश्य आदि इनके निबन्ध संग्रह हैं।अज्ञेय ने कुछ निबन्ध कुट्टिचात्तन के नाम से भी लिखे हैं।

अज्ञेय और अय्यप्प पनिक्कर की रचनाकाल हिंदी व मलयालम साहित्य में छायावादी स्वच्छन्दतावादी काल्पनिक काव्यधारा का प्रभाव था।अतः अज्ञेय की तरह पनिक्कर की भी प्रारंभिक कविताओं में सी शैली का प्रभाव है,जैसे दोनों की प्रारंभिक रचनाएँ प्रकृति, प्रणय, और सौन्दर्य पर केन्द्रित थी।पर यह शैली अधिक समय तक नहीं रहा।दोनों कवि अपनी- अपनी भाषाओं में नये नये प्रयोगों की खोज करने लगे।इस प्रकार कविता में नूतन प्रयोगों को अपनाकर ये दोनों साहित्य के क्षेत्र में आधुनिकता के प्रवर्तक बन गये।

प्रयोगवादी नयी कविता भाषा और काव्य रूपों में नया प्रयोग है।अंग्रेजी कवि टी.एस.इलियट का प्रभाव इस काव्य धारा पर पडा।पनिक्कर और अज्ञेय दोनों

कवियों की कविताओं में इलियट का प्रभाव पडा है और दोनों में अस्तित्ववादी दर्शन है।सलंबी कविता से लेकर हैकू जैसी छोटी कविता भी दोनों ने लिखी हैं।चींटी, पक्षि, गाय, जैसी पनिक्कर की कविताएं तथा साँप, गधा, जैसी अज्ञेय की कविताएं अपने छोटे आकार में समकालीन यथार्थ को अभिव्यक्त करते है। प्रयोगवादी कविता शिल्प की दृष्टि से नये प्रयोगों की कविता है।जीवन से उभरनेवाले प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग इस कविता की विशेषता है।अज्ञेय और पनिक्कर भावों का अनावरण करने वाले नूतन बिम्बों का प्रयोग किया।परंपरागत सुन्दर बिम्बों को छोडकर कालोचित नये प्रयोग दोनों ने किया।अज्ञेय की कविता कलगी बाजरे की और बावरा अहेरी आदि इस दष्टि से युगान्तरकारी कविता है।इन दोनों ने आधुनिक समाज के ढोंग पाखंड, छल-कपट और नगर संस्कृति की विद्रूपताओं का पर्दाफाश करती है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विश्व कवि रवींन्द्र ने वस्तुतः स्वराज्य की प्राप्ति में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।वे स्वयं आधुनिक भारतीय कवियों के गुरुस्वरूप है।उन्होंने समस्त भारतवर्ष को अपने गान से सचैतन्य कर दिया था। महात्मागाँधी ने अपने अहिंसक राष्ट्र - जीवन से जो अतुल्य सेवा जन्मभूमि को अर्पित की वैसी ही सेवा कविवर रवींन्द्र ने अपने सस्वर गायन से की है। एक कवि के रूप में उन्होंने समाज के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा को अपनी अनुभूति द्वारा समझा था और उनपर चिन्तन किया था।विश्वविख्यात कवि साहित्यकार,दार्शनिक और भारतीय साहित्य के एकमात्र नोबल पुरस्कार विजेता हैं।बांगला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं।

उनकी प्रकाशित कृतियों में गीतांजली, गीताली,गीतिमाल्य, कथा ओ कहानी,शिशु भोलानाथ,कणिका,क्षणिका खेया आदि प्रमुख है। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिरस्थायी सम्पर्क है,उनकी रचनाओं के अंदर वह कई रूपों में उभर आता है। साहित्य की शायद ही ऐसी कोई शाखा हो,जिनमें उनकी रचना न हो- कविता, गान, कथा,उपन्यास, नाटक,प्रबन्ध, शिल्पकला- सभी विधाओं में उन्होंने रचना की। उन्होंने कुछ पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। अँग्रेजी अनुवाद के बाद उनकी प्रतिभा पूरे विश्व में फैली थी। गीतांजली का अँगरेजी भाषा में अनुवाद कर इन्होंने अपनी प्रतिभा को पूरे विश्व में फैलाया था।

जवाब लिखिए–

1. **पंतजी की रचनाएँ कौन-कौन सी हैं।**

   उच्छवास,ग्रंथि, वीणा, चिदंबरा,पल्लव, और गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजतशिखर, वाणी, पतझर आदि उनकी रचनाएँ हैं।

2. **छायावादी कविता की विशेषताएँ क्या क्या हैं।**

   छायावादी कविता सपाट बयानी से हटकर लाक्षणिकता और आदर्श की नैतिक शब्दावली को छोडकर रहस्य, अध्यात्म, प्रेम प्रकृति मनोजगत् और सौन्दर्यवर्णन को लेकर चली थी।जगत् के दृश्यमान पदार्थों पर अध्यात्मपरक दृष्टि से चेतन सत्ता का आरोप कर वर्णन करना इस शैली की कविता में प्रमुख हो गया था।रोमांन्टिक काव्यप्रवृत्तियां भी इस काव्य में व्याप्त थी।फलतः इस शैली की कविता का नाम हिन्दी में छायावाद हो गया।

3. **जी शंकर कुरुप का परिचय दीजिए।**

   गोविन्द शंकर कुरुप या जी शंकर कुरुप मलयालम भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। उनका जन्म केरल में हुआ था। महाकवि कालिदास की कविताओं से प्रभावित होकर वे काव्य के क्षेत्र में आये। अध्यापन कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन किया। उनकी प्रसिद्ध रचना ओटक्कुषल अर्थात बाँसुरी ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा सम्मानित हुइ है।

4. **सुमित्रानंदन पंत का परिचय दीजिए।**

   सुमित्रानंदन पंत का जन्म हिमालय के अल्मोडा जिल्ले के कौसानी ग्राम में हुआ था।पंत जी की पहली कविता गिरजे का घंटा सन् 1916 की रचना है। तब से वे निरंतर काव्य साधना में तल्लीन हैं।उनके काव्य ग्रंथ हैं -उच्छवास,ग्रंथि, वीणा, चिदंबरा,पल्लव, और गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजतशिखर, वाणी, पतझर आदि।चिदंबरा पर 1968 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें प्राप्त हैं।

5. जी शंकर कुरुप की कुछ कृतियों का नाम लिखिए।

साहित्य कौतुकम् ,सूर्यकांति ,निमिषम्, चेंकतिरुकल् मुत्तुकल्, वनगायकन् ,इतलुकल् ,ओटक्कुषल, पथिकंटे पाट्टु, वेल्लिलप्परवकल्, विश्वदर्शनम् ,जीवन संगीतम् ,मून्नरुवियुम् ओरु पुष़युम् ,पाथेयम् , ,मधुरम् सौम्यम् दीप्तम्, वेलिच्चत्तिंटे दूतम्, सान्ध्यरागम् आदि ।

6. प्रेमचंद का परिचय दीजिए।

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के युगनिर्माता साहित्यकार है। प्रेमचंद युग से ही हिन्दी उपन्यास साहित्य जाना जाता है। सेवासदन,प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि,गोदान आदि इनके उपन्यास हैं,और बलिदान, बूढी काकी, परीक्षा, शतरंज के खिलाडी, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, कफन आदि इनके कुछ कहानियाँ हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है।

7. विश्व कवि रवींन्द्र जी विश्व साहित्यकार के नाम से क्यों जाना जाता है।

विश्व कवि रवींन्द्र ने वस्तुतः स्वराज्य की प्राप्ति में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।वे स्वयं आधुनिक भारतीय कवियों के गुरुस्वरूप है।उन्होंने समस्त भारतवर्ष को अपने गान से सचैतन्य कर दिया था। महात्मागाँधी ने अपने अहिंसक राष्ट्र - जीवन से जो अतुल्य सेवा जन्मभूमि को अर्पित की वैसी ही सेवा कविवर रवींन्द्र ने अपने सस्वर गायन से की है। एक कवि के रूप में उन्होंने समाज के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा को अपनी अनुभूति द्वारा समझा था और उनपर चिन्तन किया था।विश्वविख्यात कवि साहित्यकार,दार्शनिक और भारतीय साहित्य के एकमात्र नोबल पुरस्कार विजेता हैं।बांगला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। इसलिए रवीन्द विश्व कवि के रूप में जाना जाता है।